

चैतन्य लहरी

खण्ड IV

(1992)

अंक 7 व 8

... विषय सूची ...

| | पृष्ठ |
|------------------------------|-------|
| 1. चित्त..... | 2 |
| 2. श्री गणेश पूजा..... | 5 |
| 3. श्री महालक्ष्मी पूजा..... | 8 |
| 4. महा सरस्वती पूजा..... | 10 |
| 5. गुरु पूजा..... | 13 |

“आपके अन्दर सारी शक्तियां हैं जिन्हें अब आपको धारण करना है। एक बार जब आप इन्हें धारण करने लगेंगे तो आप हैरान रह जायेंगे कि एक संत, एक गुरु, एक व्यक्ति जिसे अपने गुरुत्व का आभास है, उसके सम्मुख कोई नहीं खड़ा हो सकता।”

प. पू. माताजी श्री निर्मला देवी

चित्त

डॉलिस हिलस - 26.5.1980

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन (सारांश)

आज मैं आप लोगों को चित्त के बारे में बताने जा रही हूँ। चित्त क्या है? चित्त की गति क्या है और चित्त को ऊपर उठाने और वहाँ स्थापित करने के क्या उपाय हैं? आपका चित्त ही सत्य को जानने का एकमात्र साधन है। आपका अपना चित्त ही महत्वपूर्ण है, न कि दूसरों का चित्त या आपके चित्त का दूसरों पर होना। यदि आप समझ लें कि उच्चतर स्थिति को प्राप्त करने के लिए आपको सब कुछ अपने चित्त द्वारा ही ग्रहण करना है, तो आपका कार्य हो जाएगा। इसलिए, आज जब मैं आपसे चित्त के विषय में बात करने जा रही हूँ, आपको जान लेना चाहिए कि जो भी मैं कह रही हूँ, आपको पूर्ण चित्त से उसे आत्मसात करना चाहिए। मैं आपको कह रही हूँ। अच्छा होगा कि आप निर्विचार समाधि में बैठें ताकि आप इसे ग्रहण कर सकें। मेरा प्रत्येक भाषण आपको परिवर्तित कर सकता है क्योंकि मैं स्वयं बता रही हूँ। परन्तु आप या तो सदा दूसरों के बारे में सोचते हैं या अपनी ही समस्याओं के बारे में इतने चिन्तित रहते हैं कि आपका चित्त उनके बोझ तले दबा रहता है। इसलिए जो कुछ भी आपको बताया जाता है वह आप ग्रहण ही नहीं कर पाते। अतः सब सतर्क हो जाइए और जानिए कि इन निरर्थक चीजों का कोई मूल्य नहीं है। आपके चित्त को ही उन्नत होकर कार्य करना है। अतः चित्त ही आपके पूर्ण अस्तित्व का चित्रपट है। आप कितने इसके अंदर उतरे हैं, कितना इसको खोजा है और कितना इसे उठाया है, यह एक अलग बात है।

चित्त ही परमात्मा है। यह अलग बात है कि आपका चित्त कितना प्रकाशित हुआ है। यदि आप ज्योतिर्मय हो जाते हैं तो उस सीमा तक यह एक चित्रपट है जो कि एक चित्र के लिए फैला हुआ है। जो भी आपके चित्त के रुझान, तथा कार्य कलाप उस चित्रपट पर दिखती हैं उन्हें वृत्ति कहते हैं।

अतः हमारा चित्त एक पूर्णतया स्वच्छ चित्रपट है जिसके ऊपर तीन गुण कार्य करते हैं। यह तीन गुणा आपके भूत, भविष्य और वर्तमान काल से आते हैं। किसी वस्तु अथवा अवसर के आपके अनुभव आपको स्मृति में पूर्णतया अंकित हो जाते हैं। उदाहरण के तौर पर, यदि आप काला रंग देखें तो काले रंग से संबंधित हर बात आपकी स्मृति में चली जाती है और ज्यों ही आप काला रंग देखते हैं अर्थात् आपकी स्मृति उभर आएगी। जैसे ही आप इसे अपने चित्त से देखते हैं तो

आपका चित्त काले रंग की स्मृति से रंग जाता है और आपके चित्त पर इसके प्रभाव के अनुसार आपकी क्रिया होती है। आपके चित्त का चित्रपट स्वयं अपने पुराने अनुभव के द्वारा इन चित्रों को निकाल बाहर करता है। यह एक जीवन्त चित्रपट है जो आपकी वृत्ति के अनुसार कार्य करता है।

वृत्ति एक तटस्थ शब्द है। इसका कोई बुरा अर्थ नहीं है। वृत्ति का अर्थ है कि आप किधर आकर्षित होते हैं। वृत्ति का आशय उस स्वभाव से है जिससे आप प्रवृत्त होते हैं। अतः जैसा आपका स्वभाव होता है वैसा ही आप कार्य करते हैं। यह आपकी वृत्ति आपके तीनों गुणों से आती है यही कारण है कि इस चित्त का तादात्म्य आपके साथ होता है। जब आप अपने स्वभाव या वृत्ति को पहचान कर लेते हैं तो आप मिथ्या - पहचान के क्षेत्र में ही रहते हैं।

आइए हम एक ऐसे व्यक्ति को देखें जो पहले किसी पकड़ से ग्रस्त था। सहज में आने के बाद यह पकड़ समाप्त हो जाती है। परन्तु मस्तिष्क में यह स्मृति रह जाती है कि मुझे पहले पकड़ थी। और स्मृति (बायां पक्ष) अधिक बलवान है और वह चिरकाल तक रहती है। जैसे ही वह व्यक्ति किसी ऐसे व्यक्ति के सम्पर्क में आता है जिसका कोई संबंध उस पुरानी पकड़ से होता है, स्मृति कार्य प्रारम्भ करती है और सारी चीजें बुलबुले की तरह बाहर आने लगती हैं और आप सोचते हैं कि आप फिर से पकड़ में आ गए। क्योंकि आपका बायां पक्ष कमजोर है इसलिए आप सदा स्मृति में ही रहते हैं। यदि आप स्वयं को अपनी स्मृति से अधिक बलवान बना सकें तो आपको कोई भी पकड़ नहीं हो सकती। परन्तु साक्षात्कार के बाद भी आप उस स्थिति में नहीं आए जहाँ अहंकार तथा प्रति अहंकार को एक कल्पना मात्र देखते हैं। यही कारण है कि आपका चित्त गड़बड़ी में है। चित्त का एक शुद्ध रूप वह होता है जो एक अवोध बालक में होता है। वह हर वस्तु को प्रत्यक्ष रूप (अर्थात् वस्तु का वास्तविक अनुभव) में देखता है। अतः यह जानने के लिए कि जलना क्या होता है उसे अपना हाथ जलाना होता है, ठंडा क्या है यह जानने के लिए किसी ठंडी वस्तु को छूना पड़ता है। उसकी स्मृति अभी नहीं बनी होती इसलिए वह अपने वास्तविक अनुभव के अनुसार रहता है। परन्तु यह वास्तविक अनुभव स्मृति बन जाता है। एक बार स्मृति बनने पर और इसके अधिक बलवान होने पर आपका

सारा व्यक्तित्व इस स्मृति द्वारा प्रभावित होता है। सब प्रकार के बंधन इसी से आते हैं। अनुभवों द्वारा दी गई स्मृति में परिणामस्वरूप आप प्रसन्न या खिन्न होते हैं। इस स्मृति ने आपको अहंकार अथवा प्रति अहंकार दिया है। जब आपके अहंकार की संतुष्टि होती है तो आप प्रसन्न होते हैं। यदि ऐसा न हो, यदि प्रति अहंकार हो, यदि इसके द्वारा आपका दमन हुआ हो तो आप बहुत अप्रसन्न महसूस करते हैं। अतः प्रसन्नता तथा अप्रसन्नता दोनों ऐसी स्थितियाँ हैं जहाँ आप केवल कल्पना में रहते हैं। आत्म-साक्षात्कार से पूर्व कोई स्थिति यदि आपके अहं को तुष्ट करे तो आप प्रसन्न होंगे और चोट पहुँचाये तो दुःखी होंगे तथा एक प्रकार के प्रति-अहंकार का विकास होगा। अतः दोनों स्थितियाँ आपके उत्थान में बाधक हैं क्योंकि इनके कारण आप वास्तविक से दूर हो जाते हैं। आपका चित्त भटक जाता है। बायीं ओर को झुकने पर भय, पीडा, अप्रसन्नता, निराशा और उदासी से चित्त भटकता है तथा दायीं तरफ जाने से उल्लास उत्तेजना तथा प्रभुत्व में बह जाते हैं। बाएँ तरफ का नीला रंग काले रंग में बदलना शुरु हो जाता है। जबकि दाएँ भाग का हल्का पीला रंग (या आप सोने सा पीला रंग कह सकते हैं) नारंगी तथा फिर लाल हो जाता है। अतः आप दाएँ तरफ आक्रामक हो जाते हो और बाएँ तरफ आप स्वयं से कटकर बर्फ की तरह टंडी स्थिति में पहुँच जाते हैं। दोनों ही स्थितियाँ गलत दिशा में बढ़ना है। आपका चित्त मध्य में नहीं टिकता क्योंकि वह एक बहुत ही संवेदनशील बिन्दु है। उदाहरण के लिए हम अग्नि द्वारा किसी वस्तु को भस्म कर सकते हैं, परन्तु यदि हम उसका प्रयोग संतुलित रूप से करें तो खाना बनाने के लिए, रोशनी के लिए और पूजा के लिए भी इसे प्रयोग कर सकते हैं। अपने गुणों का संतुलन कर लेने पर हम पूरी स्थिति के स्वामी हो जाते हैं। स्मृतियों या अनुभवों में हमारा चित्त नहीं उलझता और न ही हम दाएँ या बाएँ को खिंचते हैं। लोगों के लिए यह समझना कठिन है कि धार्मिक होने पर (जैसे ईरान) ने दाएँ तरफ को तपस्या की, और फिर रक्तपात की ओर क्यों जाते हैं? इसाइयों ने यही किया, भारत में ब्राह्मणों ने यही किया, बुद्ध के अनुयायियों ने यही किया। अहिंसा का प्रचार किया पर रक्तपात की ओर चले गए। बाएँ तरफ की चाल आपको बहुत धूर्त और काले (अशुभ) तरीकों को तरफ ले जाती है। दाएँ तरफ वाले लोग, जैसे कि बड़े देश या विकसित देश पहले से भी अधिक शस्त्र प्राप्त करना न्यायसंगत बताते हैं। उनके पास एक-दूसरे का सामना करने के लिए हथियार होने चाहिए। आप सभी परमात्मा की निगाह में एक ही हैं। आप क्यों लड़ रहे हैं? आप ठीक प्रकार बैठकर एक-दूसरे की बातें क्यों नहीं सुनते? आप जमीन के लिए लड़ रहे हैं। पर यह जमीन तो परमात्मा की है। 'आपकी अपनी जमीन' जो आप के भीतर है उसके बारे में

आपने कभी नहीं सोचा? युद्ध समाप्त करने की बातों से युद्ध कभी समाप्त नहीं होंगे।

आत्मसाक्षात्कार ही केवल एक रास्ता है। आत्मसाक्षात्कार द्वारा आपका चित्त ऊपर उठता है तथा उस धरातल से अलग हो जाता है जहाँ चीजें बुलबुले बनकर उठती हैं। धरातल ऊपर उठ जाता है चित्त उच्चतर स्थिति में पहुँच जाता है। दायीं ओर झुकने का परिणाम विक्षेप है, आप भटक जाते हैं हर बुद्धिजीवी दुविधा में है, चाहे वो कितना भी प्रतिभावान क्यों न हो। और वह जितना अधिक असमंजस में होता है उतना ही परेशान होता है। वह एक पागल के समान परेशान रहता है। उसका व्यक्तित्व एक पकड़ से ग्रस्त व्यक्ति के समान होता है। वह हर चीज अपने मस्तिष्क को सहायता से स्पष्ट करता है। उसके समान कुछ दूसरे व्यक्ति भी हैं। वह उनका नेता बन सकता है क्योंकि वे उससे भी अधिक दुविधा में हैं। उन्हें वह व्यक्ति इतना अधिक भटका हुआ नहीं लगता। फिर वे युद्ध तथा रक्तपात करते हैं। वे लोग हृदय, भावना, करुणा और प्रेमविहिन व्यक्ति बन जाते हैं। संयोगवश भावना प्रधान व्यक्ति यदि किसी आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति से विवाह कर ले तो वह संतुलन में आ सकता है।

हमें अपने दाएँ तरफ को भी संतुलन में लाना चाहिए। जो व्यक्ति बहुत अधिक योजनाएँ बनाता है वह भी खतरा मोल ले रहा है। अतः आपको दोनों पक्षों को संतुलित करके मध्य में रहना चाहिए। परन्तु यह संतुलन शब्द केवल कहानियों या वैज्ञानिक शोध में तो रहता है परन्तु हमारे प्रतिदिन के जीवन में देखने को नहीं मिलता। इसी कारण से, हालाँकि साक्षात्कार के बाद चित्त ऊपर उठता है परन्तु दोबारा हमारी वृत्तियों के अनुसार दाएँ या बाएँ तरफ चला जाता है। और जब यह स्मृतियाँ हमारे अन्दर काम करना शुरु करती हैं तो हमारा चित्त अधोमुखी हो जाता है और फिर से बुलबुलों के उठने की वही क्रिया शुरु हो जाती है।

इस सारे वजन के बावजूद भी आपको हल्का रहना है क्योंकि आपको अपना चित्त उस बिन्दु तक ऊपर उठाना है जहाँ आपकी एकाकारिता परमात्मा के चित्त से हो जाए। आप के चित्त का संबंध तो पहले से ही स्थापित कर दिया गया है। चित्त द्वारा आप देख सकते हैं कि मुझमें क्या खराबी है और दूसरों में क्या खराबी है और आप दूसरों के साथ कहाँ तक जा रहे हैं। परन्तु फिर भी उत्थान बंद हो जाता है। क्योंकि आप नहीं जानते कि चित्त ही शुद्ध शक्ति है पर आप इससे केवल काल्पनिक चीज ही ले रहे हैं। यदि आप धीरे-धीरे इन काल्पनिक चीजों को चित्त से हटा दें न प्रसन्न हों, न अप्रसन्न, केवल देखें मात्र, तो आपके चित्त का उत्थान होने लगेगा और यह पहले से कहीं ऊँची स्थिति पर पहुँच जाएगा।

हमारी ऊर्ध्व गति अति धीमी होती है। सत्वगुण में रहते हुए भी आपकी स्थिति खराब हो सकती है। उदाहरण के तौर पर यदि आप कहें कि मैं सत्वगुणी बनने का प्रयत्न कर रहा हूँ, अर्थात् आप सब कुछ देखने लगते हैं। अपनी बुद्धि द्वारा (चैतन्य लहरियों द्वारा नहीं) अच्छे बुरे में भेद करने लगते हैं। क्या हमें यह छोड़ नहीं देना चाहिए? क्या हमें दानशील होना चाहिए? क्या हमें लोगों की सेवा करनी चाहिए? कुछ लोग कहते हैं कि हम मोक्ष सा बड़ा काम कर रहे हैं। पहले वह स्वयं तो मोक्ष प्राप्त कर लें। सत्वगुण के यह विचार भी आपको गतिहीन कर सकते हैं और आपको सदा के लिए जड़ कर सकते हैं और यह आपके अन्दर अति गुप्त रूप से कार्य कर सकते हैं। किसी दान संस्था में एक बार कार्य करते ही आपके चित्त पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। परन्तु यदि आपका चित्त उन्नत हो जाता है तो आप कहते हैं कि दान के अतिरिक्त कुछ भी नहीं। एक साधारण व्यक्ति और एक आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति में यह अन्तर होता है। कल्पना का वास्तविकता बनाकर दिखाने वाले चित्त का पतन हो जाता है। अब चित्त साफ-साफ देख सकता है कि यह केवल कल्पना मात्र है। चित्त को सब काल्पनिक वस्तुओं को छोड़ देना चाहिए। और यह करने का सबसे अच्छा तरीका है - निर्विचार समाधि, क्योंकि जब भी आप इन तीन गुणों को पार करते हैं आप निर्विचार समाधि में पहुँच जाते हैं। आपको आज्ञा चक्र पार करना होता है। एक बार जब आप आज्ञा पार करते हैं, यह तीनों गुण उस अंततः स्थिति में पहुँच जाते हैं जहाँ गुण होते हैं और आप जानबूझ कर कुछ नहीं करते, यह सब तो, बस हो जाता है।

विश्लेषण पश्चिम की एक बीमारी है। आप क्या विश्लेषण कर रहे हैं? वो ये कभी नहीं जानते कि (क्रोमोसोम्स) गुण सूत्र की (स्पिन्दल) तकली सी क्रिया क्यों होती है। वो बता नहीं सकते कि एक अणु का विभाजन कैसे होता है। अब वे क्या विश्लेषण कर रहे हैं? शायद परमात्मा के लिए उन्होंने विश्लेषण किया है। उनके विश्लेषण के द्वारा ही मेरी बातें रिकार्ड होती हैं, उनका ध्वनि लेखन होता है। उनके विश्लेषण के कारण ही मैं टी.वी. पर आ सकती हूँ, यदि वो मुझे कुछ समय दें। परन्तु विज्ञान के कारण आपका चित्त बहुत भटकाव में भी रहता है। मैं नहीं जानती कि विज्ञान को प्राथमिकता दी जाए या फिर पुरातनता को। यदि आपने विज्ञान में अपना सन्तुलन बनाए रखा होता, तो वो आपकी सहायता करती। परन्तु सन्तुलन बिगाड़ गया। मनुष्य को कोई वस्तु दीजिए, वो जानता है कि इसे किस प्रकार और बिगाड़ना है। अतः सर्वप्रथम आपको स्वयं को समझना है और निश्चय करना है कि इन काल्पनिक वस्तुओं को मैं अपने चित्त में नहीं आने दूँगा। साक्षात्कार प्राप्त होने पर आपको कल्पना तथा भावना प्रधान लोगों पर हँसी आती है चाहे वो आपको हृदय विहीन ही समझें।

अब आप सहजयोगी हैं, क्योंकि प्रकाशमय हैं, आपको जानना है कि तीव्र गति से हमारे चित्त को उच्चतर स्थिति में जाना है। आत्मसाक्षात्कार में क्या हुआ है? आपकी कुण्डलिनी जागृत होकर ऊपर उठी है। बाल की तरह पतले उसके एक सूत्र ने आपके सहस्रार को खोल दिया है। परन्तु वह एक बहुत छोटी सी घटना घटित हुई है, चाहे है यह अति कठिन कार्य। आपके चक्रों का मध्य से भेदन हुआ है, परन्तु बाकी चित्त तो पहले की तरह बना हुआ है। अब आपको इसे फैलाना है। इसे खोलिए ताकि कुण्डलिनी के बहुत से सूत्र ऊपर उठ सकें और आपका चित्त, जो इन चक्रों में है, फैल सके। विस्तृत होकर यह सारे अन्धकार को दूर कर देता है।

प्रत्येक चक्र पर हमारा चित्त है, जो कि कुण्डलिनी के प्रकाश द्वारा प्रकाशित हो रहा है। परन्तु जितना अंधेरा आपने इकट्ठा कर लिया है उसके लिए यह प्रकाश बहुत कम है। विशेषकर पश्चात्य लोगों को चाहिए कि अपनी भ्रान्ति से बाहर आएँ। एक समय में यह भी भ्रान्ति थी कि यह साक्षात्कार है भी कि नहीं। मुझे आशा है कि यह प्रश्न तो अब समाप्त हो गया है।

अपने चित्त को कल्पना से अलग करके ही हमें आगे बढ़ना है। मैं आपके साथ खेल भी करती हूँ। जब तक आपको स्वयं पर विश्वास नहीं हो जाता, मैं आपको आपके बारे में कोई गलत विचार भी देती हूँ। मैं देखना चाहती हूँ कि आपका चित्त कहाँ तक जा रहा है। आप अभी तक अपने बारे में विश्वस्त नहीं हैं, इसी कारण से विश्वास की कमी है। चित्त पर स्वामित्व आपको तभी प्राप्त होगा जब आप देखेंगे लगेंगे कि आपको परेशान करने वाली चीजें मिथ्या हैं। मिथ्या का त्याग कीजिए और समझिए कि आप शाश्वत चित्त हैं, शाश्वत प्रकाश। केवल यही बात आपको अज्ञानता से दूर रखती हैं। अज्ञानता को समझना बहुत आसान है कि आपने मिथ्या को वास्तविकता मान लिया है। इसे फेंक दीजिए, यह केवल काल्पनिक है। आप हैरान होंगे कि आपका चित्त किस प्रकार से उर्ध्वगति को प्राप्त होता है। आप देखेंगे कि यह बेकार की चीजें, जिनसे आपको भय लगता था, हट जायेंगी और आप मुस्कराएँगे। और केवल तभी आप पूर्ण रूप से आनन्द में रह सकेंगे। तब आपका चित्त आनन्द सागर में सराबोर होगा। मैं कहती हूँ कि आप आनन्द सागर में होंगे और आप (सहजयोगी) तो पहले से ही सराबोर हैं। इस अवस्था को बनाए रखें।

अब रोजमर्रा के जीवन में किस प्रकार इस अवस्था को बनाए रखें। भूतकाल की स्मृतियों को किस प्रकार समाप्त करें। इन्हें समाप्त करने का अर्थ है नई स्मृतियाँ पाना। पहली बार जब आपको आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हुआ था उसे याद रखें। सदा इसके विषय में सोचें। जब भी कोई कष्टदायी या उल्लसित

करने वाली स्मृति आए तो स्मरण करने का प्रयत्न कीजिए कि किस प्रकार आपको आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हुआ, जब भी किसी बात पर आपको क्रोध आए या आपमें ईर्ष्या भाव आए तो स्वयं को समर्पित तथा विलीन करने का आनन्द का स्मरण कीजिए। इस प्रकार नई स्मृतियों का सृजन होगा। इस प्रकार से जब आप स्मृतियों का सृजन करने लगेंगे तो मिथ्या स्मृतियों को समाप्त करने के लिए बहुत से अच्छे क्षणों की याद आपको आने लगेंगी जैसे किसी की कुण्डलिनी जागृत करने की स्मृति।

किसी को जागृति देते समय आपको निर्विचार समाधि में होना चाहिए। पर विचार तो बहुत प्रभावित करते हैं। ऐसे

समय आप दूसरों की कुण्डलिनी जागृत करने के आनन्द को अपने स्मृति-पटल पर अंकित कर सकते हैं। इन सुन्दर क्षणों के वैभव को आप अनुभव करेंगे तथा यह क्षण बढ़ते ही चले जायेंगे। आपको परेशान और भयभीत करने वाले, प्रसन्नता या खिन्नता देने वाले क्षण अब पवित्र आनन्द बन जायेंगे क्योंकि अब प्राप्त आपके अधिकतर अनुभव आनन्द से परिपूर्ण होंगे। आनन्द में कोई विचार नहीं होता, यह तो केवल एक अनुभव है — प्रत्यक्ष अनुभव। इसी कारण मैंने कहा कि अपनी आंखें खुली रखें। आशा है आप मेरे कथन का अर्थ समझेंगे।

परमात्मा आपको आशीर्वादित करें।

श्री गणेश पूजा

पर्थ, आस्ट्रेलिया - फरवरी 1992

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन (सारांश)

“आस्ट्रेलिया लौटकर आना अति आनन्ददायी है”। यहाँ भयंकर गर्मी थी, पर अब आपने देखा कि कितनी वर्षा हुई! क्योंकि आप सब चाहते थे कि बारिश हो और वातावरण शीतल हो जाए। दोनों ही कार्य हो गए हैं। तब चिन्ता यह हो गई कि वर्षा के कारण साधक नहीं आएंगे। यह समस्या भी हल हो गई क्योंकि वर्षा तो साधकों की परीक्षा के लिए थी। मैंने उन्हें कहा कि यदि वे वास्तविक साधक हैं तो वे आएंगे, नहीं तो जिज्ञासा विहीन भौड़ का क्या लाभ? देखिए कल कितने सुन्दर लोग पहुंचे। पूरा रास्ता भीगते हुए वे आए क्योंकि वे गहन साधक थे। उन्होंने एक भी प्रश्न नहीं पूछा। क्या आप ऐसी कल्पना कर सकते हैं? आस्ट्रेलिया में सदा मुझ पर प्रश्नों की झड़ी लग जाती है। अब के मैंने इतनी जिज्ञासा देखी कि मैंने उनसे कहा कि “मुझसे प्रश्न पूछिए”, पर एक भी प्रश्न नहीं पूछा गया। तो एक ही बार में मैंने कितने सारे कार्य कर दिए?

कार्यक्रम के समय बिजली चली गई। उसका भी अच्छा प्रभाव हुआ क्योंकि हमें मोमबत्तियां जलानी पड़ीं जिनकी लौ में सारे भूत विलय हो गए। जब श्री माताजी कमरे में आई तो यह घटना हुई। यह समझना भी आवश्यक था कि बिजली पर अत्यधिक निर्भरता भी अच्छी बात नहीं। अतः सदा किसी प्राकृतिक साधन का प्रबन्ध हमारे पास होना चाहिए। हमें कुछ लालटेन आदि रखने चाहिए और बिजली के स्थान पर अधिक समय प्रकृति के संग रहने का प्रयत्न करना चाहिए। मैं आपको बताती हूँ कि बिजली हमारी आंखों को खराब करने के लिए जिम्मेवार है। यह केवल हमें रोशनी ही नहीं देती, हमारी आंखों

की ज्योति को छीनती भी है। अतः बिजली के बहुत अधिक उपयोग ने हमें दास सम बना दिया है। अधिक प्राकृतिक वातावरण तथा रहने के लिए अधिक प्राकृतिक स्थानों का होना अच्छी प्रवृत्ति है।

यदि परम-चैतन्य परमात्मा के प्रेम की शक्ति है तो यह सन्तुलन प्रदान करता है। अतः परम-चैतन्य को लाने वाले सहजयोगियों के जीवन में सन्तुलन होना चाहिए। मैं कहती हूँ कि इस स्थान (आस्ट्रेलिया) पर महागणेश का निवास है। स्थिर होने पर श्री गणेश सन्तुलन लाते हैं। जब ये दायें ओर को जाने लगते हैं तब कोई निर्माणकारी कार्य शुरू कर होता है और जीवन के लिए आवश्यक सभी कुछ ये करते हैं। परन्तु विपरीत दिशा में यदि ये चल पड़ें तो ये विध्वंसक हो उठते हैं। इनके सन्तुलन के बिना जीवन नहीं चल सकता। इनके दोनों ही गुणों— रचनात्मक तथा विध्वंसक — का सन्तुलित होना आवश्यक है।

प्रकृति का जैसा नियम है, जिस चीज को भी रचना हुई है उसका विनाश होता है और रचनात्मक रूप से कोई नई चीज विकसित हो जाती है। फिर इसके कुछ भाग नष्ट हो जाते हैं। अतः मृत्यु में ही जीवन निहित है। मृत्यु कुछ भी नहीं। कल्पना कीजिए कि यदि एक बार उत्पन्न हुए सभी लोग यहाँ जीवित होते तो हम यहाँ न होते। बहुत से पशुओं की मृत्यु हुई और वे मानव रूप में उत्पन्न हुए। अन्य लोगों को पृथ्वी पर अवतरित होने का अवसर देने के लिए मनुष्यों को मरना ही होगा। मृत्यु के बाद कुछ समय आराम करके आपको फिर वापिस आना है। अतः मृत्यु जीवन का परिवर्तन मात्र है, बिना

मृत्यु के जीवन अस्तित्व विहीन है। यह जीवन व मृत्यु के बीच सन्तुलन है। अतः एक सहजयोगी को कभी भी मृत्यु से भयभीत नहीं होना। उसकी मृत्यु केवल कुछ समय विश्राम कर अधिक उत्साह तथा शक्तिपूर्वक दूसरा जन्म लेने के लिए है।

प्रकृति की बहुत सी चीजें पूर्णतया सन्तुलित हैं। यह सन्तुलन यदि समाप्त हो जाए तो हम कहीं के न रहेंगे। अतः हमें समझना चाहिए है कि ये सब कार्य श्री गणेश ही करते हैं। वे ही सभी भौतिक पदार्थों की तथा मानव रचित वस्तुओं की देखभाल करते हैं। उदाहरणतया पहले चक्र (मूलाधार) की सृष्टि पृथ्वी माँ ने की और दूसरे चक्र (स्वाधिष्ठान) ने पूरे ब्रह्माण्ड को रचा। परन्तु पहला चक्र ही पवित्रता तथा मंगलमयता को फैलाता है तथा सन्तुलन प्रदान करता है।

सन्तुलन खो देने पर लोग या तो बायें या दायें को चले जाते हैं। कुछ सहजयोगी अति धर्म-परायण हैं। परन्तु उनमें प्रेम का अभाव है। प्रेम के बिना धर्मपरायणता अर्थहीन है। प्रेम का अभिप्राय यह नहीं कि आप किसी चीज से लिप्त हो जाएं परन्तु निर्लिप्त प्रेम तथा उत्तरदायित्व तो आप में होना ही चाहिए। श्री गणेश मूलाधार पर हैं और मूलाधार स्थित हमारी सभी इन्द्रियों का नियंत्रण उनके हाथ में है - विशेषकर सभी प्रकार के मलोत्सर्जन का। अतः हम वे लोग नहीं हैं जो इन इन्द्रियों की लिप्सा में या इनसे पूर्ण विरक्ति में विश्वास करते हैं। हमें इनके सन्तुलन में विश्वास है। अतः आपने विवाहित होकर सन्तुलित जीवन बिताना है। आपके यथोचित बच्चे हों और आप विवेक एवं गरिमायुज जीवन व्यतीत करें। पर प्रेम का होना आवश्यक है - पति-पत्नी में, बच्चों तथा माता-पिता में तथा सभी से प्रेम आवश्यक है। एक व्यक्ति के असन्तुलित होने से पूरा परिवार असन्तुलित हो जाता है। प्रेम पूर्वक परिवार को अच्छी तरह स्थापित करना भी एक कला है। यदि पति-पत्नी दोनों ही ऐसा करने को रजामन्द हो जायें तो, मुझे विश्वास है, ऐसा करना कठिन न होगा, क्योंकि आप लोग सहजयोगी हैं। सन्तुलन के गुण को आप पहले से ही जानते हैं।

समलिंगकामुकता तथा टी. एम. (ट्रान्सैडेंटल मैडीटेशन) में की जाने वाली तपश्चर्या के कारण पश्चिमी देशों में बहुत असन्तुलन है। एक चीज के बाहुल्य तथा दूसरी के अभाव की अपेक्षा सन्तुलन में रहना स्वाभाविक है। असन्तुलन ही लोगों के कष्टों का कारण है।

अपने सभी कार्य हमें गणेश चक्र से सीखने चाहिए। कभी हमें वस्तुएं संग्रह करनी पड़ती हैं, कभी उपभोग करनी पड़ती हैं और कभी फेंक देनी पड़ती हैं। कहीं से भी जब हमें कोई विचार आते हैं तो उनमें से जो हमारे हित में हों वही हमें अपनाने चाहिए बाकी सब फेंक देने चाहिए। परम-चैतन्य की कृपा से ही हम ऐसा कर सकते हैं।

उदाहरण के रूप में कैथोलिक मत से ईसा की पूजा आदि जो भी अच्छी बातें हैं वो हम ले लेते हैं और विवेकहीन सभी कुछ छोड़ देना होता है। ईसा ने चरित्र पर बहुत बल दिया, चरित्र के विषय में बहुत कुछ कहा। पर ईसाईयों ने चरित्रहीनता की सारी सीमाएं लांघ दी। आपके बच्चों का क्या होगा? आपके समाज का क्या होगा? व्याभिचार जिस भी समाज की शैली बन गया है वह समाज पूर्णतया असन्तुलित है तथा ईसा की शिक्षा के विपरीत चल रहा है।

श्री कृष्ण ने कहा है कि हर मानव में आत्मा का निवास है। अतः सब मानव समान हैं। आप जाति-प्रथा कैसे अपना सकते हैं। कार्य के अनुसार आप जातियां बना सकते हैं जन्म के आधार पर नहीं। हर मानव में आत्मा है अतः सबका उत्थान हो सकता है। ईसा ने भी यही कहा है। उन्होंने कभी नहीं कहा कि स्त्रियों में आत्मा नहीं है, पुरुषों में है। धर्म-अर्थात् सन्तुलन, मध्य में रहना - से इसका कोई संबंध नहीं। यदि आप मध्य में हैं - गुरुत्व के बिन्दु पर हैं - तो आप किसी भी गलत दिशा की ओर नहीं झुक सकते। गुरुत्व धरा माँ से आता है और धरा माँ ने ही श्री गणेश की रचना की है। अतः अति स्वाभाविक रूप से यह गुरुत्व मानव में आ जाता है। गुरुत्व अन्तर्जात है, इसे अपनाना नहीं पड़ता।

बचपन में यदि बच्चों को उनके गुरुत्व, गरिमा और महानता के विषय में बताया जाए तो वे स्वाभिमानपूर्वक तुरन्त ही इन गुणों को विकसित कर लेंगे। यह गुरुत्व आपको एक प्रकार का आकर्षण प्रदान करता है। गंभीरता का अर्थ यह नहीं कि आप मुंह लटकाए बैठे रहें। गंभीरता का अर्थ है कि किसी भी प्रकार की उथल-पुथल में आप विचलित न हों। गंभीरता का अर्थ बहुत गहन है। जैसा कि आप श्री गणेश के चरित्र से देख सकते हैं - गंभीरता का अर्थ है कि आप अपने मध्य में खड़े हैं, एक ऐसे व्यक्ति हैं जो सब कुछ देखते हुए भी न विचलित होता है न किसी प्रलोभन में आता है, आत्म-सन्तुष्ट न वह कुछ मांगता है, न उसकी कोई आवश्यकता है, न वह किसी से बदला लेता है। वह सदा क्षमा करता है क्योंकि अपने गुरुत्व से बाहर निकलने का उसके लिए कोई मार्ग नहीं - गुरुत्व से वह बस बंधा हुआ है। ऐसा व्यक्ति किसी असन्तुलित या गलत कार्य करने वाले व्यक्ति के पीछे नहीं दौड़ता। ऐसे व्यक्ति पर उसे दया आती है।

दृढ़तापूर्वक खड़े हो जाना ही दूसरों को डराने तथा उनका विनाश करने के लिए काफी है। वह व्यक्ति एक ऐसे बिन्दु पर खड़ा है जहाँ उसे विचलित नहीं किया जा सकता, पर अन्य लोग तो विनाश की ओर दौड़ रहे हैं। तो उनके पीछे दौड़कर अपना विनाश कर लेने का क्या लाभ? गुरुत्व में खड़े व्यक्ति यदि चाहें तो अन्य लोगों की सहायता कर सकते हैं क्योंकि वे देख सकते हैं कि कोई व्यक्ति गिरने वाला है। फिर भी यदि

व्यक्ति सन्तुलन में न आना चाहे तो आप उसे मजबूर नहीं कर सकते।

श्री गणेश का महानतम गुण यह है कि उनमें सन्तुलन है। उस गुरुत्व के साथ वे इस धरा माँ पर बैठते हैं। आस्ट्रेलिया श्री गणेश का देश है अतः स्वाभाविक रूप से यहाँ के लोगों में सन्तुलन होना आवश्यक है परन्तु उनमें सन्तुलन का अभाव है। आस्ट्रेलिया में सहजयोग शुरू करने से पूर्व श्री माताजी का वहाँ का अनुभव यह था कि वहाँ के लोग बहुत शराब पीते हैं, व्यर्थ की बातें करते हैं, बड़ी कठोरता से हाथ मिलाते हैं तथा हर कार्य को बहुत हंगामे से करते हैं। श्री गणेश के देश का तार-तम्य परम-चैतन्य से होना चाहिए। प्रकृति की गोद में रहने वाले पशु भी परमात्मा के सम्पर्क में तथा उसके अनुशासन में होते हैं। वे एक-दूसरे पर अत्याचार नहीं करते, वे अति भले होते हैं और झुंड नहीं बनाते। वे बढ़ते हैं, जो भी कुछ उन्हें खाने को दिया जाए उसे स्वीकार करते हैं और प्रसन्नतापूर्वक रहते हैं। यदि उन्हें नष्ट भी होना हो तो इस विनाश को स्वीकार करते हैं।

श्री गणेश के इस देश में आप प्रकृति को स्वयं में आत्मसात कर लें और आप में सन्तुलन इस प्रकार से आ जाए कि आपका पूरा स्वभाव उस सन्तुलन को दर्शाए। पर आस्ट्रेलिया में बहुत बड़ी कठिनाई यह है कि यहाँ लोगों के बहुत से झुंड हैं, लोग आपस में लड़ते रहते हैं तथा उनकी बहुत सी समस्याएँ हैं। गणेश के देश में, जहाँ उनके गणों का निवास है, यदि गण परस्पर लड़ने लगे तो क्या परिणाम होगा? यदि हमारे शरीर के अन्दर रोग प्रतिकारक ही परस्पर लड़ने लगे तो शरीर का क्या होगा? अतः आप भी गणों के समान ही इस देश में जन्म विशिष्ट लोग हैं। इतनी उपलब्धियाँ पाने के बावजूद भी अन्य देशों की सभी बुराइयाँ लेने लगे हैं तो श्री गणेश के इस देश में जन्म लेने का क्या लाभ? गणेश की इस भूमि पर आपके अन्दर पूर्ण सन्तुलन होना चाहिए। यही सब मैं आस्ट्रेलिया के सहजयोगियों से आशा करती हूँ। और श्री गणेश के सन्तुलन का विवेक उन्होंने पूरे विश्व को देना है।

किसी के प्रति हमें कोई दुर्भाव नहीं रखना चाहिए और सदा हमें क्षमाशील होना चाहिए। अंग्रेजी भाषा इतनी मृदु नहीं कि इसमें यदि आप किसी को कुछ कहें तो वह बुरा न माने। यह अति विनोदपूर्ण भाषा है पर विनोदिता भी कभी-कभी व्यक्ति को कठिनाई में फंसा देती है। इसका अर्थ यह भी नहीं कि आप किसी को कठोर शब्द बोलें या किसी व्यक्ति, अपने कर्तव्य, अपने बच्चों, पति या पत्नी के प्रति उदासीन हो जाए। किसी के प्रति उदासीनता भयंकर कठोरता है। किसी छोटी सी बात के लिए यदि कोई स्त्री नाराज होकर अपने पति से बात नहीं करती या पति पत्नी का तिरस्कार करता है, उसकी फिक्र नहीं करता, देखभाल नहीं करता तो सहजयोग

के अनुसार यह अपराध है। यह गलत है क्योंकि आपमें सन्तुलन तथा स्वाभाविक कोमलता होनी चाहिए। अन्य लोगों से आपको अति प्रेम से बात करनी चाहिए तथा आपको दयालु तथा अच्छा होना चाहिए। पता लगाइए कि आप सब कर रहे हैं या नहीं।

समूहों के बीच हमें प्रेम की शक्ति का उपयोग करना है — केवल प्रेम ही तो हमारी शक्ति है। श्री गणेश को देखिए — कितने भले, मधुर तथा अबोध हैं। उनकी कार्य विधि कितनी भली है। कैसे वह तुम पर कार्य करते हैं, कैसे वे तुम्हारे लिए चीजों की रचना करते हैं और कितनी शान्ति से वे सारा कार्य करते हैं। उदाहरण के रूप में किसी फूल को खिलते हुए या प्रकृति के किसी अन्य कार्य को जब श्री गणेश करते हैं तो आप उसे देख नहीं सकते। इतनी कोमलता से वे सारे कार्य करते हैं और हर पत्ते को दूसरे से भिन्न बनाते हैं। गणेश की पृथ्वी पर रहने वाले हम सबको कितना भद्र होना चाहिए? लोगों से व्यवहार में हमें कितना मधुर होना चाहिए? यह दर्शाने के लिए कि हम गणेश हैं आप को अति भद्र होना चाहिए। आपको विशेष प्रकार के गण बनना है। आस्ट्रेलिया के लोगों के बारे में मैं यह महसूस करती हूँ।

आप सबको वास्तविक रूप से प्रेममय, भद्र, करुणामय और हितैषी बनना सीखना है। छोटी-छोटी चीजें लोगों को बहुत प्रसन्नता प्रदान कर सकती हैं। मैं स्वयं छोटी-छोटी युक्तियाँ उपयोग करती हूँ। आपको भी इनका उपयोग करना चाहिए। एक दिन एक महिला को मैंने एक साड़ी दी। उसने कहा "माँ आप कैसे जानती हैं कि मुझे ये रंग पसन्द है?" क्योंकि मैंने तुम्हें ज्यादातर यही रंग पहने देखा है अतः मैं जानती हूँ कि तुम्हें ये रंग पसन्द है। "क्या आपने मुझे देखा था?" "निःसन्देह मैंने तुम्हें देखा था"। उसे बहुत प्रसन्नता हुई। उसे लगा कि माँ मेरा ध्यान रखती हैं। मैं सब कुछ जानती हूँ क्योंकि मुझे आपकी चिन्ता है। आप सबकी। मैं जानती हूँ कि आप कहाँ खड़े हैं, आपको क्या परेशानी है, क्या किया जाना चाहिए, आपको क्या पसन्द है और क्या नापसन्द। ऐसा करने में कोई हानि नहीं। अच्छा सौहार्द बना लेना ही ठीक है तभी आप समझ सकेंगे कि समस्या क्या है।

श्री माता जी ने बताया कि कितने प्रेम से वे लोगों को सुधारने का प्रयत्न करती हैं, पर यह सब हमें उन लोगों को बताना नहीं चाहिए। उन्हें बताने के स्थान पर हम बंधन दे सकते हैं। हमें कोई कठोर कदम लेने को या किसी के मुंह पर उसकी कमी कहने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। ध्यान-धारणा मध्य (केन्द्र) में रहने में सहायक होती है फिर भी कभी-कभी हम ध्यान से निकल जाते हैं। कठिनाई पड़ने पर तुरन्त अपने गुरुत्व बिन्दु पर चले जाइए..... ऐसा यदि हो जाए तो समस्या समाप्त हो जाएगी। मेरे साथ ऐसा ही होता है। कहीं

भी जब मैं कोई कठिनाई देखती हूँ तो मुझे लगता है कि मैं तुरन्त अपने गुरुत्व की गहनता पर चली गई हूँ और वहाँ से मैं सभी कुछ स्पष्ट देख सकती हूँ, और तब मैं समस्याओं का हल करती हूँ। आपने न तो अपना मुकाबला दूसरों से करना है। और न ही ये सोचना है कि आपका कोई लाभ या हानि होगी। आप अपने मालिक हैं। अतः चिन्ता मत कीजिए। न कोई ईर्ष्या है और न कोई प्रलोभन। आप स्थिर हैं। निश्चिन्त।

कभी-कभी अगुआ गण अपने पद के लिए चिन्तित होते हैं। पर सहजयोग में नेता तो बाजीगरी मात्र है। नेतृत्व मात्र एक मजाक है और यदि आप इस बात को समझ जाएं तो कार्य और अच्छी तरह से होगा। सहजयोग में कोई पुरोहित-तंत्र नहीं है। हम सब एक हैं। कोई भी किसी दूसरे से बेहतर नहीं है।

अतः आपको नेता से कोई भय नहीं होना चाहिए। यदि आप अपने गुरुत्व पर स्थिर है तो वह आपको समझ जाएगा। अपने गुरुत्व बिन्दु पर आते ही नेता जान जाएगा। अतः आप अपने गुरुत्व बिन्दु पर स्थिर रहें। कोई भी आपको परेशान नहीं कर सकता। सहजयोग में आपको कोई भय या चिन्ता नहीं होनी चाहिए। आप सभी सन्त हैं। सारे गण, देवदूत और परमात्मा की सर्वव्यापक शक्ति आपकी देखभाल कर रही है। यह श्री गणेश का स्थान है, सभी कुछ ठीक हो जाएगा।

आपको परेशान करने वाले को सर्वव्यापक शक्ति सम्भाल लेगी। इस विषय में आपको कुछ करने की आवश्यकता नहीं। देखने का प्रयत्न कीजिए कि क्या आप सन्तुलन में हैं – अपने परिवार से न बहुत लिप्त और न बहुत विरक्त। लिप्सा प्रेम की मृत्यु है। अतः हमें निर्लिप्त प्रेम की यथोचित समझ प्राप्त करनी है, जहाँ गुरुत्व पर खड़े होकर सब का हित सोच सकें। यदि आपको लगे कि कोई व्यक्ति ठीक नहीं है तो भी आपको सन्तुलन खाने की कोई आवश्यकता नहीं। अपना सन्तुलन ही यदि आपने खो दिया तो उस व्यक्ति को आप कैसे ठीक कर सकेंगे? इस प्रकार आप अपनी सारी घृणा, क्रोध, कामुकता तथा स्पर्धा भाव से छुटकारा पा लेंगे क्योंकि आप अपनी गरिमा में स्थित हैं। आपको किसी की प्रशंसा की इच्छा नहीं, आप जानते हैं कि आप अपने स्थान पर खड़े हैं और आत्म सन्तुष्ट हैं।

श्री माता जी से विशेष – साक्षात्कार भी आवश्यक नहीं। यह सब तो अहं है। श्री माता जी कभी निजी नहीं हैं। हर समय वे हमें उपलब्ध हैं। ये सब बातें अज्ञान से तथा इस सत्य से उपजी है कि आप अपने गुरुत्व बिन्दु पर नहीं हैं। अतः आज हमें अपने हृदय में सोचना चाहिए कि हमारा गुरुत्व बिन्दु क्या है? और ये कि हमें दृढ़ता-पूर्वक खड़े होना है।

परमात्मा आप पर कृपा करें।

श्री महालक्ष्मी पूजा

ब्रिसबेन, आस्ट्रेलिया, फरवरी 20, 1992

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन (सारांश)

यह महालक्ष्मी पूजा इसलिए की जा रही है कि हम समझ सकें कि विश्व निर्मला धर्म क्या है। महालक्ष्मी तत्व आप सबके मध्य में स्थित है। एक बार जब आप लोगों के दम्भ और पाखंड से तंग आ जाते हैं तो अपने अन्दर के सत्य को खोजने लगते हैं। इस प्रकार जिज्ञासु या साधक कहलाने वाले लोगों के एक नए वर्ग का जन्म होता है। वे अन्य लोगों से बहुत भिन्न हैं। वे किसी भौतिक लाभ, सत्ता या पद की चिन्ता नहीं करते। वे सत्य को खोजना चाहते हैं। यह वर्ग आप लोग हैं और इसी कारण आप सहजयोग में आए हैं।

हमारी जिज्ञासा पूर्व जन्मों से और हमारे वर्तमान जीवन के हालात से आती है जैसे एक वैभवशाली परिवार में जन्म लेना और वैभव से तंग आ जाना। जिज्ञासा का दूसरा स्रोत सत्य को खोजने की परम्परा है। भारत में धन एवं सत्ता की खोज को मिथ्या माना जाता है और लोग संस्कृति से सुसंस्कार प्राप्त

करते हैं। सत्य को खोज फैशन भी हो सकती है परन्तु इसके परिणाम भयानक हो सकते हैं और इस प्रकार के लोग फैशन के भंवर में खो भी सकते हैं। नशा करने वाले लोग भी साधक हो सकते हैं बशर्ते कि वे ऐसा अपने महालक्ष्मी तत्व को पाने के लिए करते हों, फैशन के कारण नहीं। तो इस महालक्ष्मी तत्व ने उनके अन्दर जन्म लिया और स्पष्ट करने लगा कि इस सबसे परे भी तो कुछ अवश्य होगा। भिन्न देशों के बंधनों ने भी आपके अन्दर तथा बाहर सहजयोग की उन्नति में बाधा डाली है।

महालक्ष्मी तत्व को समझने के लिए हमारा यह जानना आवश्यक है कि दो अन्य मार्ग भी हैं जिन पर हम भटक सकते हैं। यह हमारे वर्तमान जीवन की पृष्ठभूमि पर निर्भर करता है। पूर्व जन्म की पृष्ठभूमि के परिणामस्वरूप ही आप उचित मार्ग पर आए हैं, पर पूर्व जन्म वर्तमान जीवन से

आच्छादित हो रहा है (ढका जा रहा है) समाज ने कई प्रकार से आप पर प्रभुत्व जमाया है। कार्यक्रम में आने वाले बहुत से लोग जन्म जन्मान्तरों से जिज्ञासु हैं परन्तु बायें तथा दायें ओर के झुकाव के कारण बनी आदतों से वे सहजयोग में टिक नहीं पायेंगे। महालक्ष्मी तत्व को ठीक रखने के लिए सहजयोगी को सदा अन्तर्दर्शन करना आवश्यक है। अपना मूल्यांकन करने का सर्वोत्तम उपाय अपनी चैतन्य लहरियों को महसूस करना है। हमारे बहुत अधिक बायें या दायें को झुकने के कारण जब हम अपनी लहरियों को महसूस नहीं कर पाते तो हमारा महालक्ष्मी तत्व कार्य नहीं कर रहा होता। हम पटरी से उतर जाते हैं। अपने तथा अन्य लोगों के ऐसे बन्धनों से हमें सावधान रहना चाहिए जो हमें मध्य मार्ग से हटाते हैं। अति विरक्त रूप से साक्षी बनकर हमें स्वयं को देखना है दूसरों को नहीं।

हमें पता होना चाहिए कि यदि हममें कोई शारीरिक समस्या है (रोग) तो हम मध्य (केन्द्र) में नहीं हैं। अपने को पूर्णतया रोगमुक्त करने की योग्यता हममें होनी चाहिए। हमें सदैव शान्त होना चाहिए, क्रुद्ध नहीं। जो व्यक्ति अपने मध्य में है वह क्रोध का दिखावा तो कर सकता है पर वास्तव में क्रोधित नहीं होता, वह क्रोध या भावनाओं में लिप्त नहीं होता। आपको विश्वास होना चाहिए कि आप पूर्णतया निर्लिप्त हैं। अपनी वास्तविक अवस्था में आकर आप अपने स्वामी होते हैं और देख सकते हैं कि आप कहाँ जा रहे हैं। यदि हममें बायें या दायें ओर झुकने की कमी अब भी है तो हम पक्के सहजयोगी नहीं हैं। हमने उन्नति नहीं की।

महालक्ष्मी तत्व को स्थिर करने के लिए केन्द्र में जाने का पहला मापदंड यह है कि हमारा शरीर सामान्य होना चाहिए। हमें स्वस्थ तथा प्रसन्न रहना चाहिए, सदा शरीर के दर्दों की शिकायत नहीं करते रहना चाहिए। दूसरे यदि हम मध्य में हैं तो हमारा चित्त अधिकतर प्रकृति तथा इसकी कार्य प्रणाली की ओर होता है। अपने चहुँ ओर की सृष्टि का हमें आनन्द लेना चाहिए। यह आनन्द विस्मयकारी रूप से गहन तथा आनन्ददायी होता है तथा हमें निर्विचार समाधि की ओर ले जाता है।

हमें किसी भी धर्म की निन्दा नहीं करनी चाहिए। धर्म के नियमों पर न चलने वाले लोग जो साक्षात्कारी भी नहीं हैं वही स्वयं को धार्मिक कहते हैं। चर्च की निन्दा की जा सकती है पर ईसा की और बाइबल की कभी भी नहीं की जा सकती। स्वतः ही हम सभी अवतरणों का सम्मान करेंगे, किसी भी अवतरण, धर्म या पैगम्बर की कभी भी निन्दा नहीं करेंगे। किसी धर्म के प्रति हम में दुर्भाव नहीं होगा किसी भी धर्म ने आज तक कोई हानि नहीं पहुंचायी। गलत प्रकार के लोग जो धर्म को धन तथा सत्ता प्राप्त करने के लिए उपयोग करते हैं

वं मानव को हानि पहुंचाते। महालक्ष्मी तत्व पर आधारित विश्व निर्मल धर्म सभी धर्मों का सार तत्व तथा सभी धर्मों का सत्य है।

बाइबल में पॉल ने ईसाईमत के विषय में बहुत प्रकार के भ्रम पैदा कर दिए हैं। दोष स्वीकार करने की मूर्खता शुरू करके उसने लोगों को दोषभाव ग्रस्त कर दिया तथा स्त्रियों को महत्वहीन बना दिया। ईसा को समझे बिना ऐसा करने का कोई अधिकार उसे न था। वह एक अपस्मारो (मिर्गी रोग पीडित) था जिसे सत्ता प्राप्त करने के लिए मंच की आवश्यकता थी जिसके लिए उसने ईसाई मत की व्यवस्था की। ईसा ने ऐसा करने को कभी नहीं कहा और न ही कहा कि अपराध स्वीकार कर स्वयं को दोष-ग्रस्त कीजिए। उन्होंने सदा क्षमाशीलता की बात की।

थोड़े से समय में ईसा ने हमें सत्य का ज्ञान दिया पर व्याख्याकार इसे गलत दिशा में ले जाते हैं। पर सहजयोगियों को मेरी कही हुई किसी बात की व्याख्या नहीं करनी पड़ती, मैं जो भी कहती हूँ वे इसे जानते हैं। यदि वे व्याख्या करने लगते हैं तो अवश्य उनमें कोई कमी है। आप मुझ पर टीका नहीं कर सकते। जो भी कुछ मैं कहती हूँ, बड़ी साधारण अंग्रेजी भाषा में कहती हूँ। टीका करने के लिए उसमें कुछ होता ही नहीं। मैं स्पष्ट बात कहती हूँ जिसमें ठीक करने के लिए कुछ नहीं होता। जो लोग स्वयं को, मुझे ठीक करने के लिए, बुद्धिमान समझते हैं उन्हें समझ लेना चाहिए कि उनको बुद्धि में मेरी व्याख्या करने की क्षमता नहीं है। हम मध्य में हैं या नहीं, यह जानने का यह एक तरीका है।

सहजयोग पर भाषण देते हुए सावधान रहना चाहिए कि कहीं अहं में फंसकर कोई ऐसी बात न कहे जो श्री माताजी ने कभी कही ही नहीं। जो लोग पक्के सहजयोगी नहीं हैं उन्हें आत्मसाक्षात्कार तो देना चाहिए पर सहजयोग पर भाषण नहीं देना चाहिए। जो व्यक्ति आपको साक्षात्कार देता है वह आपका गुरु नहीं है, उसका कोई डर उसका अहसान आपको नहीं मानना चाहिए। ऐसा न करने पर, उस व्यक्ति या समूह का अनुसरण करते हुए आप बायें या दायें को चले जायेंगे। महालक्ष्मी तत्व से बाहर चले जाने पर हमारे इर्द-गिर्द की नकारात्मक शक्तियाँ हम पर कब्जा कर लेती हैं और हमारी अवस्था साधारण लोगों से भी बदतर हो जाती है।

हम किसी एक देश के न होकर पूरे ब्रह्माण्ड के हैं - विश्व निर्मल धर्म के हैं। हम ब्रह्माण्ड के अंग-प्रत्यंग हैं। अब हम शाश्वत जीवन में - असीम में प्रवेश कर गए हैं। एक नन्हें कमल की तरह जो कीचड़ में से निकलता है और कीचड़ जिस पर चिपका हुआ होता है पर अन्त में अति स्वच्छ रूप

में वह कीचड़ से बाहर आ जाता है। तब वह चारों ओर अपनी सुगन्ध बिखेरता है – यहाँ तक कि कीचड़ को भी वह सुगन्ध देता है। हमारा भी यही कार्य है। महालक्ष्मी तत्व केवल हमारे लिए न होकर पूरे विश्व के लिए है। एक नयी जाति, एक नए समाज का, जो कि ज्योतिर्मय है तथा सत्य और प्रेम पर खड़ा है – सुधार कर रहे हैं। हममें करुणा होनी चाहिए।

हमें आध्यात्मिकता से सुसज्जित होना चाहिए और स्वयं को देखना चाहिए। सुदृढ़ होने पर कोई भी चीज हमारे मार्ग में बाधा न बन सकेगी। हमें इच्छा करनी चाहिए कि हमारी लहरियाँ ठीक हों, हमारे चक्र शुद्ध हों, हम मध्य में तथा सन्तुलन में रहें। अपनी समस्याओं का हल खोजने में हमें आनाकानी नहीं करनी चाहिए। हमें अति शुद्ध तथा दृढ़ सहजयोगी होना चाहिए। बहुत से लोग सहजयोग में बहुत ऊंचे उठ सकते हैं पर अभी तक उनको इच्छाओं की अभिव्यक्ति नहीं हुई है। आपको बताया मेरी बहुत सी बातों का प्रभाव आप पर उदासीनता पूर्ण है।

महालक्ष्मी तत्व हमारे अन्दर का तत्व है जो पोषण करने के साथ-साथ हमें सन्तुलन प्रदान करता है। यह एक पथ प्रदर्शक तत्व है जो सभी कार्य करती है, जो विवेक प्रदान करके परमात्मा तथा सत्य के प्रति प्रेम देती है और इस प्रेम से आप उन्नत होते हैं। एक साधारण कार्य जो आपको करना है कि आपको मेरी कुण्डलिनी पर होना है केवल अपना चित्त मेरी कुण्डलिनी पर डालना है। निर्विचार होने से समस्या हल हो जाएगी क्योंकि विचार ही नहीं होगा। उससे आपका अहं निश्चित रूप से समाप्त हो जाएगा क्योंकि तब आप समझ जायेंगे कि श्री माताजी ही सभी कुछ कर रही हैं, मैं जब कुछ कर ही नहीं रहा तो मुझे गर्व क्यों होना चाहिए? आपके सारे बन्धन टूट जायेंगे क्योंकि मेरी कुण्डलिनी पूर्णतया पवित्र है। यह किसी से लिप्त नहीं

है। यह सहजयोग से भी लिप्त नहीं है। इसका कार्य केवल पोषण करना है। यदि यह पोषण करती है तो भी ठीक और नहीं करती तो भी ठीक।

सभी कुछ आपकी इच्छा पर निर्भर है। किसी भी प्रकार से कोई आपको मजबूर नहीं करेगा। कुण्डलिनी तो गंगा नदी की तरह बह रही है और यदि आप चाहें तो यह आपके अन्दर बहेगी। भक्ति ही इच्छा है, भक्ति का आनन्द प्राप्त करने की श्रद्धा। यह इतनी सुन्दर चीज है कि हम निर्विचारिता में इसका आनन्द लेते हुए इसमें विलय हो जाते हैं। यही वह वांछित तथा सर्वोच्च अवस्था है जहाँ आप परमात्मा से एकाकार होकर आनन्द सागर में तैर रहे होते हैं।

महालक्ष्मी तत्व को सदा रक्षा होनी चाहिए और सदा इसको देखभाल करते हुए इसमें झाँका जाना चाहिए। महालक्ष्मी के आशीर्वाद इतने अधिक हैं कि इनका वर्णन एक भाषण में नहीं किया जा सकता, पर इनमें सबसे महान आशीर्वाद पूर्ण आत्म सन्तुष्टि है। अपने आत्मा में ही आप आनन्दित रहते हैं। महालक्ष्मी तत्व जब हमारे मस्तिष्क में प्रवेश करता है तो विराट की अभिव्यक्ति होती है तथा हम अति सुन्दर रूप से सामूहिक हो जाते हैं। तब हम यह नहीं सोचते कि हम किस देश के हैं, हमारी चमड़ी का रंग क्या है या हमारा धर्म क्या है।

यह आनन्द भी तभी आता है जब महालक्ष्मी तत्व आपके सहस्रार को प्रकाशित करता है। पूर्णता का भाव आ जाता है – व्यक्ति विशेष का नहीं। विराट से हम एकाकार हो जाते हैं, उसी से जुड़ जाते हैं। विराट का यह भाव कि हम पूर्ण के अंग-प्रत्यंग हैं – आपको पूर्ण शान्ति तथा सुरक्षा प्रदान करता है। महालक्ष्मी तत्व के प्रति समर्पण का अर्थ है अपने अहं तथा बन्धनों का त्याग। इसी कारण महालक्ष्मी इतनी महत्वपूर्ण है।

परमात्मा आपको आशीर्वादित करें।

महा सरस्वती पूजा

ऑकलैंड, न्यूजीलैंड – 23.2.92

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन (सारांश)

महा सरस्वती तत्व दायीं ओर को है। पहला ब्रह्मदेव का तत्व है जो कि सरस्वती तत्व है। फिर यह महा सरस्वती आपको महा ब्रह्मदेव तत्व पर ले जाता है। इसे हम हिरण्यगर्भ भी कहते हैं। यह सहजयोगियों के लिए अति महत्वपूर्ण है।

आत्मसाक्षात्कार पाए बिना जो लोग बहुत अधिक सोचते हैं या बहुत अधिक सृजन करते हैं वे बहुत अधिक दायें या बायें

को चले जाते हैं। उदाहरण के रूप में यदि कोई कलाकार दायें को चला जाएगा तो शनैः शनैः उसके चित्र अति उग्र अभिव्यक्ति हो सकते हैं। वह गंभीर तथा कठोर होगा तथा उसकी अपनी ही शैली होगी, किसी दूसरे की शैली वह नहीं अपनाएगा। और जब इससे तंग आ जाएगा तो गूढ़ कला आदि शुरु कर देगा। परन्तु आत्मसाक्षात्कार के बिना गूढ़ कला अति निरर्थक तथा

हास्यकर भी हो सकती है।

आज का पॉप संगीत भी, जो कि अति आक्रामक है, इसी का परिणाम है। ऊर्ध्व गति को न जा सकने के कारण आप दायें को चले जाते हैं। इस प्रकार लोग अन्य आक्रामक लोगों को प्रभावित करते हैं। लोकप्रियता वास्तविक सफलता का चिन्ह नहीं है। लोकप्रियता तो आनी-जानी है। यह इतिहास को प्रभावित नहीं करती।

अंग्रेजी भाषा में शेक्सपीयर से लेकर बहुत से लेखकों ने मानव के प्रयत्नों की निरर्थकता की अभिव्यक्ति की है। वे अवधूत-सम हैं जो अपने आध्यात्मिक जीवन में बहुत विकसित हुए हैं। मानवीय प्रयत्नों की निरर्थकता को वे देख सकते हैं और फिर मनुष्य को एक ऐसे बिन्दु पर ला सकते हैं जहाँ वह समझ सके कि उसे इन मूर्खतापूर्ण अमानवीय प्रयत्नों से ऊपर उठकर उच्च प्रयास करना है तथा शाश्वत मूल्य की कला कृतियों की रचना करनी है। सोमर सेंट मॉम तथा क्रॉनिन से लेखक मध्य में स्थित थे, पर बाद में जब हैमिंग्वे आए तो वे दायें को झुकने लगे। आधुनिक उपन्यास गंदगी तथा हिंसा से परिपूर्ण हैं, ये मानवीय उपभोग लिए कतई नहीं हैं।

दायें ओर को झुकने वाले कलाकार यूनानी त्रासदी के शिकार हैं। वे रोते-बिलखते रहते हैं और आपको भी रुलाते हैं। कुछ तामसिक कलाकार बहुत अधिक मद्यपान करते हैं तथा अत्यधिक भावुक होकर कष्ट तथा पीड़ा के काल्पनिक संसार में रहते हैं। भावुकता के वेग में अपने मस्तिष्क में रचित रोमांचपूर्ण अपनी कृतियों के विषय में उनके अपने ही विचार हैं। भारत में भी बहुत अधिक मद्यपान करने वाले मुसलमानों ने गजल गाना शुरू कर दिया। वे किसी सभा या मिलन में न गाकर केवल तनहाई में गाते हैं। हे परमात्मा मैं आप से कब मिलूंगा?

समाज भी दायें और बायें को झुकता है। जब यह दायें ओर को बढ़ता है तो यह आक्रामक चीजें पसन्द करता है तथा बायें ओर झुकने पर तामसिक चीजें। लोगों के भी दो प्रकार के स्वभाव हैं और इन्हीं से वे चीजों का मूल्यांकन करते हैं। परन्तु कुछ कलाकार मध्य में (सन्तुलित) भी हैं जैसे टालस्टाय और फ्रांस के लेखक डॉ. मोपासां। हर भाषा में हर तरह के लोग हैं पर संस्कृत लेखक विशेषकर मध्य में हैं। वे न दायें को हैं और न बायें को। कारण यह है कि साहित्य में भी कुछ नियम बंधन हैं। भारत में पश्चिमी विचार नहीं है कि हम सब को स्वछंद होना चाहिए। यह विचार स्वीकार्य नहीं है। अतः साहित्य में भी एक प्रकार की सीमा है। साहित्य क्या है? इसे स+हित कहते हैं अर्थात् हित+कारी। यदि यह हितकारी नहीं है तो साहित्य नहीं है, व्यर्थ है। परन्तु जब जर्मन और जापानी लोग संस्कृत साहित्य को खोजते हैं तो वे कामसूत्र का बतंगड़

बनाते हैं। भारतीय विद्वान तो कामसूत्र को साहित्य का दर्जा ही नहीं देते। धिनीनपन और असभ्यता की ये रचनाएँ तो इन आक्रामक (दायें ओर को झुकने) लोगों के लिए इनाम है। दायें ओर का व्यक्ति शराब पीने लगता है क्योंकि वह कमी पूर्ति चाहता है, अपनी सत्ता प्राप्ति को प्यास बुझाना चाहता है या अपनी आक्रामकता को कम करना चाहता है। आज के समाज में लोग पांच दिन कठोर परिश्रम करते हैं फिर मद्यपान करते हैं, फिर धूप स्नान करते हैं और सप्ताहांत तक सारा पैसा खर्च करके सोमवार को सिर दर्द लेकर लौटते हैं।

इन कार्यों के परिणाम जब आने लगते हैं तो कलाकार परेशान हो जाता है। तब उसके अन्दर रचनात्मकता के प्रति एक सूक्ष्म दृष्टिकोण उत्पन्न होता है। कला में वह सच्चे ज्ञान की खोज करने लगता है। परमात्मा के गुणगान करने वाले शुद्ध कलात्मक ज्ञान की धारा उसे चीजों को बेहतर रूप से करने की प्रेरणा देती है और तब उसमें महा सरस्वती तत्व कार्य करने लगता है। परन्तु जब वे परमात्मा के बारे में सोचने लगते हैं तो भी वे जाल में फंस जाते हैं। धन एवं सत्ता लोलुप धर्मों को मानते रहने पर भी वे आध्यात्मिक नहीं बन पाते। मानसिक व्यक्तित्व विकसित हो जाने पर भी उनकी कहीं हुई बात का प्रभाव दूसरों पर नहीं पड़ता क्योंकि वे जागृत (साक्षात्कारी) लोग नहीं होते, परमात्मा से जुड़े हुए नहीं होते और उनके सभी कार्य केवल मानसिक ही होते हैं।

अतः महा सरस्वती तत्व के जागृत होने पर आप मानसिक और सत्य के भेद को स्पष्ट देखने लगते हैं और महसूस करने लगते हैं इनसे ऊंचा भी कुछ होगा। जिस धर्म में वे पैदा हुए हैं उसकी सारी आध्यात्मिक कृतियों को वे पढ़ते हैं। तब वे दूसरे धर्मों का भी अध्ययन करते हैं और समझ पाते हैं कि सारे धर्म एक ही बात कहते हैं। आज्ञा चक्र पर आकर अचानक उन्हें पता चलता है कि कहीं कुछ कमी अवश्य है, कि लोग धर्म को केवल मस्तिष्क के स्तर पर ही स्वीकार करते हैं पर इससे परे भी कुछ अवश्य होगा। इस अवस्था में यदि किसी को साक्षात्कार प्राप्त हो जाए तो वह इस पर टिक जाता है।

इस अवस्था तक पहुंचे सभी संगीतकारों, कलाकारों में महा सरस्वती तत्व जागृत किया जाना चाहिए तब अचानक ही वे बड़ी सुगमता से आत्म साक्षात्कार को पा सकेंगे। बहुत से भारतीय संगीतज्ञों ने श्री माताजी से अपनी सृजनात्मक शक्ति बढ़ाने की प्रार्थना की। जागृति होने पर वे विश्व-विख्यात हो गए। अध्ययन, आध्यात्मिकता या लेखन आदि कार्यों से महा सरस्वती तत्व को पहुंचे लोग जब आज्ञा पर पहुंचते हैं तो या तो निराश होकर वे बायें को चले जाते हैं और सभी कुछ उन्हें व्यर्थ लगने लगता है या साक्षात्कार को पाकर वे अति प्रगल्भ कलाकार, लेखक आदि बन शाश्वत मूल्य वाली कृतियों की

सृष्टि करते हैं।

महा सरस्वती तत्व आपको अति सूक्ष्म बना देता है और आप समझने लगते हैं कि कला और रचनात्मकता का जो स्थूल ज्ञान हमें है वह सूक्ष्म होना चाहिए तभी यह सूक्ष्म लोगों को अच्छा लगेगा। विलियम ब्लेक को साधारण लोगों ने पागल कवि कहा, पर वे साक्षात्कारी व्यक्ति थे। मास्करो - जिन्होंने गीता का अनुवाद अंग्रेजी में किया - आज्ञा के स्तर पर जब पहुंचे तो श्री माताजी को स्वप्न में देखा और तुरन्त उन्हें पहचान लिया।

अपने अन्तः में हमें महा सरस्वती तत्व का भी बढ़ने देना चाहिए। सहजयोग में हमें पुस्तकें पढ़ने की मनाही नहीं है, पर जिन भी पुस्तकों को हम पढ़ें उनमें अपने लिए सूक्ष्म बातों को देखें। विद्वान लोग अपने लिखे हुए सत्य का भी प्रचार नहीं कर पाते। यह केवल एक खेल की तरह बाह्य घटना है जो घटित होगी और धुला दी जाएगी। इसे अन्तर्जात बनना होगा। ऐसा तभी सम्भव होगा जब आपकी आत्मा आपके चित्त में आ जाएगी।

आत्म साक्षात्कारी व्यक्ति होने के नाते जिनका महा सरस्वती तत्व जागृत हो चुका है, हम लोगों को, सारगर्भित पुस्तकें पढ़नी चाहिए और समझना चाहिए कि उनमें सहजयोग किस प्रकार भरा हुआ है। भिन्न-भिन्न समय पर लिखी होने के कारण इन पुस्तकों में सहजयोग के किसी न किसी भाग के बारे में कहा गया है, पूर्ण सहजयोग के बारे में किसी में नहीं लिखा। अब हमें धार्मिक विचार के सम्पूर्ण ज्ञान को जानना होगा ताकि हम समझ सकें किस प्रकार सभी धर्म सम्पूर्ण हैं। सहजयोगियों को अध्ययन द्वारा समझना चाहिए कि अन्य लोगों ने क्या कहा है और वे कहाँ पर भटक गए हैं। हमें मूर्ख लोगों को नहीं पढ़ना चाहिए। अध्ययन करके हमें विचार के विकास की सूक्ष्मता को देखना चाहिए कि किस तरह इनका विकास हुआ, कैसे यह अधिकाधिक सूक्ष्म हुई और किस प्रकार बहुत से लोगों ने सुषुम्ना के मध्य मार्ग में योगदान दिया तथा योग के विषय में सभी कुछ लिखा। उदाहरण के रूप में रविन्द्रनाथ टैगोर ने आरम्भ में तो वियोजन (अलग होना) के बारे में लिखा पर बाद में सूक्ष्म होकर उन्होंने आत्मा से मिलन के विषय में लिखा। बुद्ध - जिन्होंने अपने परिवार सहित सब कुछ त्याग दिया था - के साथ भी यही हुआ। अन्त में वे गया पहुंचे और जब वे थक कर परेशान हो गए तो उन्हें आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो गया। परन्तु उनके अनुयायी समझते हैं कि साक्षात्कार से पूर्व जो त्याग उन्होंने किए वे महत्वपूर्ण हैं। वे इतने गहन साधक थे कि उन्हें आत्मसाक्षात्कार मिलना ही था। सहजयोगियों को इस प्रकार की तपस्या नहीं करनी। अपने पूर्व जन्मों में वे सब कर चुके हैं और जानते हैं कि ऐसा करने का कोई लाभ नहीं। तभी तो वे सहजयोग में आए। अतः आप सब अति भाग्यशाली हैं

कि आप यहाँ आए, अपना आत्मसाक्षात्कार प्राप्त किया और आनन्द को प्राप्त कर रहे हैं।

आक्रामक प्रवृत्ति का एक राजनैतिक पहलू भी है। राजनीति में भी विकास सूक्ष्म से सूक्ष्मतर हो जाता है। उदाहरणार्थ रूस में साम्यवाद धन लोलुप न होकर अति सत्ता लोलुप था। वहाँ गाँवाँचोव जैसे व्यक्ति ने मध्यमार्ग पर उत्पन्न होकर साम्यवाद को सन्तुलन की ओर अग्रसर किया। अभी तक वह पूर्णतया सफल नहीं हुए हैं फिर भी अपने महान विचारों तथा दो विचारधाराओं में स्पर्धा को कम करने के कारण वे पूरे विश्व में जाने जायेंगे।

कट्टरता आज की दूसरी समस्या है। यह भी आक्रामक प्रवृत्ति को दब है तथा लोगों को हिंसा, सनकीपन तथा पागलपन की सीमा तक ले जाती है। अब एक और रोग शुरू हो गया है। बहुत अधिक दायें को झुकने वाले लोगों का चेतन मस्तिष्क विगड़ जाता है और व्यक्ति रंगने वाले जीवों की तरह हो जाता है। इस रोग के मरीज सब कुछ समझते हैं, अच्छी तरह बातचीत करते हैं पर चाहते हुए भी वे अपने हाथ-पांव नहीं हिला सकते। यह रोग सभी के लिए चेतावनी है अतः हमें सावधान रहना चाहिए।

बहुत अधिक आक्रामक होना सहजयोगियों के लिए बहुत भयानक है। कुछ लोग अति धर्मान्धता-पूर्वक सहजयोग प्रचार करने लगते हैं। हमें ऐसा नहीं करना चाहिए। किसी प्रकार का प्रभुत्व, आज्ञा, रोका-टोकी या संगठन नहीं होना चाहिए। यह तो अति नैसर्गिक (सहज) तथा सुन्दर घटना है जो स्वतः ही कार्य करती है। हम सहजयोगियों के लिए प्रेम, करुणा तथा ईश्वर कृपा ही महत्वपूर्ण हैं। ईश्वर कृपा अति सुन्दर जीवन्त शक्ति है जो हर प्रकार की रचनात्मक वस्तुओं की रचना करती है। इस सूझबूझ के अभाव में आपको नतुत्व में कठिनाई होगी। आक्रामक लोगों में सहजयोग कार्यान्वित नहीं होता स्वयं अपना मूल्यांकन करना सर्वोत्तम है। किसी के लिए कुछ करते हुए या किसी को कुछ कहते हुए हमें स्वयं से पूछना चाहिए कि 'क्या यह हितकारी है या आक्रामक क्या यह हमारी ख्याति के लिए है या अन्य लोगों के हित के लिए?' एक बार जब आप इस प्रकार मूल्यांकन करने लगेंगे तो आपकी बातचीत और कार्य प्रणाली में सुधार होगा। हर चीज को आप लीला के रूप में देखें। साक्षी भाव से जब आप हर चीज को देखेंगे तो हर समस्या को बड़े सुन्दर ढंग से सुलझा पायेंगे। बिना बोले, बिना कुछ कहे, साक्षी अवस्था में आप अति शक्तिशाली हो जाते हैं। मेरा कहने का अभिप्राय है कि साक्षी अवस्था में आप सहज ही विभिन्न समस्याओं को हल कर सकते हैं।

परमात्मा आप पर कृपा करें।

गुरु पूजा

कबैला, इटली, 19.7.1992

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन (सारांश)

गुरुत्व एक अवस्था है पद नहीं क्योंकि पद तो बाह्य है और किसी को भी दिया जा सकता है। बाह्य गुण के लिए किसी भी व्यक्ति को पद दिया जा सकता है। यह एक अवस्था है अर्थात् अन्तर्जात अस्तित्व का गुरुत्व स्तर तक विकसित होना। इसके बिना कैसे यह अवस्था प्राप्त की जा सकती है। सहज रूप से किस प्रकार हम इसे प्राप्त करें? कुछ गुण हमें प्रारम्भ से ही विकसित करने चाहिए। ध्यानावस्था में निर्विचार होना पहला गुण है। ध्यानावस्था में आप थोड़े समय के लिए निर्विचार हो सकते हैं। शनैः शनैः यह समय बढ़ता जाना चाहिए। यह एक अवस्था है। तो हम किस प्रकार यह अवस्था प्राप्त करें? मनुष्य की समझ में यह नहीं आ सकता कि कोई काम सहज ही हो सकता है। क्योंकि यह घटना अति सहज तथा साधारण है। आपको निर्विचारिता का मंत्र मिला है। अब निर्विचार रहते हुए आप साक्षी बनना शुरू कर दें। केवल देखें - दर्शक बनकर। साक्षी भाव हममें पहली अवस्था की रचना करता है। आप केवल दर्शक बन जाइए - साक्षी। साक्षी बनते ही जिस भी वस्तु को आप देखते हैं वह आपको पूर्ण विचार देगी, अपनी स्थूलता का भी तथा सूक्ष्मता का भी। देखते ही आप इसे समझ जायेंगे। सहजयोगी के नाते यह आपका ज्ञान बन जाता है। आधुनिक शब्दावली में हम कह सकते हैं कि ज्यों ही आप कुछ देखते हैं यह आपके मस्तिष्क में अंकित हो जाती है और आनन्द, ज्ञान करुणा की अभिव्यक्ति स्थिति के अनुसार करती है। अब आपके बहुत से आयाम हैं जिन्हें आपने विकसित करना है। उदाहरणार्थ आप किसी ऐसे व्यक्ति से मिलते हैं जिसके साथ आपने व्यवहार करना है। वह बोलता ही चला जा रहा है। आप बस निर्विचार हो जाइए। निर्विचार होते ही उसकी बड़बड़ का प्रभाव आप पर समाप्त हो जाएगा क्योंकि आप तो एक पूर्णतया अलग दुनिया में हैं। पर इस अवस्था में आपकी शक्ति प्रकट होगी और उस व्यक्ति को शांत कर देगी। या तो यह उसे मौन कर देगी या उसके हृदय में आपके लिए अथाह प्रेम जाग उठेगा।

गुरु शब्द का अर्थ है गुरुत्व। पृथ्वी में गुरुत्व है। कोई भी व्यक्ति जो गुरु है उसमें गुरुत्व होना ही चाहिए। इस गुरुत्व को आप किस प्रकार विकसित करें? कुछ लोग बनावटी रूप से अति गंभीर हो जाते हैं और कभी-कभी दर्शाते हैं कि वे संजीदा हैं। गुरुत्व तो आपके अन्दर है।

आपके गुरु पद की द्वितीय अवस्था में गुरुत्व की अभिव्यक्ति होना आवश्यक है। ज्यों ही आप साक्षी बनते हैं आपका गुरुत्व स्वतः ही प्रकट होने लगता है। यह क्रोध या गंभीरता के रूप में नहीं प्रकट होता, इसकी अभिव्यक्ति तो इस प्रकार होगी कि सभी कुछ अत्यन्त गरिमामय और तेजपूर्ण बन जाएगा। जिस अवस्था में अब आप उन्नत होते हैं वह प्रभावशाली बन जाती है। इससे पूर्व ऐसा न था। पहले हर समय चालाकी करनी पड़ती थी और उल्टा-सीधा बोलना पड़ता था। पर अपनी निर्विचारिता में आप अपने गुरुत्व की अभिव्यक्ति कर सकते हैं। यह गुरुत्व चुम्बक की तरह कार्य करता है। धरा माँ में चुम्बकीय शक्ति है जो गुरुत्व कहलाती है जिसकी ओर लोग आकर्षित होते हैं और पृथ्वी माँ के गुरुत्व के कारण ही हम इस पर विश्राम करते हैं। आपको चुम्बकीय स्वभाव, चरित्र और व्यक्तित्व प्राप्त हो जाता है। चुम्बकीय व्यक्तित्व तुरन्त दर्शाता है कि यह अपनी शक्ति को प्रकट कर रहा है। जैसे सूर्य की किरणें पत्तों पर पड़ती हैं तो साधारण प्रतीत होने वाली किरणें पत्तों में क्लोरोफिल बनाने में अपनी शक्ति की अभिव्यक्ति करती हैं। इसी प्रकार जब आप उस उच्चावस्था में होते हैं तो बिना कुछ कहे, मात्र एक दृष्टिपात से आप अपनी अभिव्यक्ति करते हैं। केवल इतना ही नहीं, परन्तु सभी कुछ आपके स्मृति पटल पर अंकित हो जाता है। मुझे कभी कुछ नहीं भूलता।

साक्षी बन निर्विचारिता में जब आप कुछ देखने लगते हैं तो उस वस्तु के ज्ञान को आत्मसात करने में आपके सम्मुख कोई बाधा नहीं होती। कोई विचार नहीं होता। केवल आत्मसात्करण ही होता है। तब यह प्रकट होता है। इस प्रकार देवी शक्ति हममें कार्य करती है। अपने गुरुत्व से हम अन्दर की गहनता को छू लेते हैं और यह (गहनता) हमारे अन्दर इस देवी शक्ति को चलाती है तथा इसकी अभिव्यक्ति करती है। जब तक हम अपने अन्दर उस गहनता को छू नहीं लेते सहजयोग भी हरे रामा हरे कृष्णा की तरह ही है। इसी कारण मुझे लगता है कि बहुत लोगों के लिए सहजयोग हरे रामा हरे कृष्णा की तरह ही है। यही कारण है कि मैं बहुत से सहजयोगियों को पटरी से उतरते देखती हूँ क्योंकि अपने अस्तित्व की गहनता में उतरने के लिए तथा देवी शक्ति की अभिव्यक्ति के लिए गुरुत्व उनमें नहीं है। उदाहरण के रूप में जो वाहन ठीक प्रकार से जुड़ा न हो उसका प्रयोग किसी महत्वपूर्ण कार्य के लिए नहीं किया जा सकता। अति हल्की प्रतीत होने वाली देवी शक्ति ही आपके

जीवन में सर्वाधिक महत्वपूर्ण वस्तु है। आप कभी भी इस दैवी शक्ति का वजन या दबाव नहीं महसूस करते, परन्तु यदि आपका मार्ग शुद्ध नहीं है तो यह दैवी शक्ति ठीक प्रकार बहकर अपनी अभिव्यक्ति नहीं कर सकती। अतः जब हम कहते हैं कि हम सर्वशक्तिमान परमात्मा के यंत्र हैं तो हम अपने स्रोत से जुड़े होते हैं। यदि यह यंत्र ठीक नहीं है तो यह वह अभिव्यक्ति नहीं कर सकता जो इसे करनी चाहिए। हम इन साधारण यंत्रों से बहुत ऊंचे हैं, विज्ञान द्वारा बनाए गए जटिल तथा उन्नत यंत्रों से भी कहीं ऊंचे क्योंकि हम एक ऐसी अवस्था में पहुंच जाते हैं जहाँ हम स्वयं ही विज्ञान बन जाते हैं, सत्य-विज्ञान। पूर्ण सत्य।

अतः आत्मसम्मान गुरु के लिए आवश्यक है। यह अति महत्वपूर्ण आवश्यकता है। आत्मसम्मान प्राप्त करने के लिए हमें अन्तर्दर्शन करना होगा और जानना होगा आज मैं पहले जैसा नहीं हूँ। मैं एक आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति हूँ। मुझे शक्तियाँ प्राप्त हो गई हैं। मुझ में प्रेम, करुणा, सूझबूझ, रचनात्मकता तथा दूसरे लोगों को साक्षात्कार देने की शक्तियाँ हैं। किसी के भी पास ये शक्तियाँ नहीं थीं। सहजयोग में हम अपने बारे में ही नहीं सोचते रहते क्योंकि स्व-चेतना हमें अहं दे सकती है। पर हममें आत्मसम्मान होना चाहिए। मैं एक गुरु हूँ। मैं कोई सड़क-छाप साधारण व्यक्ति नहीं हूँ। मैं विशेष हूँ। मैं सत्य के तट पर हूँ, मैंने अन्धे तथा मूढ़ लोगों का बचाना है।

उस समय एक प्रकार की शान्ति आपमें छा जाएगी। किसी भी विपत्ति के समय आप अत्यन्त शान्त हो जायेंगे। यह भी एक अवस्था है। यदि कोई चीज अग्रसन या परेशान करती है तो मौन के उस धुरे पर पहुंचने का प्रयत्न कीजिए। यह शान्ति (मौन) आपको वास्तव में शक्तिशाली बना देगी। यह मौन केवल आपका ही नहीं है क्योंकि इस अवस्था में आप ब्रह्माण्डीय मौन में होते हैं। आपका संबंध ब्रह्माण्ड को चलाने वाली दैवी शक्ति से होता है। यदि आप केवल मौन (शान्त) हो जाएं तो समझ लें कि आप परमात्मा के साम्राज्य में बैठे हैं। राजपद प्राप्त करने का महान सम्मान जब आपको मिल जाए तब आप चलकर अपने सिंहासन पर बैठें और चहुं ओर देखकर इस शान्ति की अवस्था को महसूस करें कि अब आप बादशाह हैं। यह मौन इस बात की निशानी है कि निःसन्देह अब आप परमात्मा से जुड़े गए हैं। आप अब शान्त हैं क्योंकि अब परमात्मा आप के हर कार्य को सम्भालेंगे। आपको कुछ नहीं करना पड़ेगा। केवल निर्विचार (शान्त) रहना होगा। मजबूरन नहीं। यह भी एक अवस्था है। किसी समस्या या उथल-पुथल के आते ही एकदम आपका चित्त कूदकर उस मौन (शान्त) पर चला जाएगा और ऐसा होते ही आप सर्वव्यापक शक्ति से जुड़े जाएंगे।

प्रेम की यह सर्वव्यापक शक्ति क्या है? क्या यह हमारे

चारों ओर बहती हुई कोई ऊर्जा है? या यह किसी प्रकार की नदी या आकाश? यह वास्तविकता की सम्पूर्णता है। बाकी चीजें असत्य हैं। वास्तविकता इतनी कार्यकुशल है कि यह कभी असफल नहीं होती। इस मानवीय बुद्धि से तो हम कल्पना भी नहीं कर सकते कि किस प्रकार यह कार्य करती है तथा नियंत्रण करती है। उदाहरणार्थ आप पेड़ देखते हैं। गुलाब का पौधा केवल गुलाब ही देगा इस पर सेब नहीं लगेंगे। नारियल के पेड़ की तरह न बढ़कर एक सीमित ऊंचाई तक यह पौधा बढ़ेगा। इस प्रकार के सभी गुणों को बनाए रखा जाता है, उनका पोषण होता है, देखभाल होती है, ठीक समय तथा मौसम में उन्हें पूर्णतया नियन्त्रित किया जाता है। इसी कारण ऋतुम्भरा प्रज्ञा कहलाती है। मानवोद्यम मस्तिष्क के लिए यह समझ पाना जटिल कार्य है कि यह किस प्रकार कार्य करती है। सोचने, समझने, समन्वय, सहयोग, प्रेम तथा आपकी देखभाल करने वाली इस शक्ति के लिए सारे चमत्कार खेल मात्र हैं। यह आपकी सेवा में है। जहाँ भी आप जायेंगे संबंध बना रहेगा। यह यात्रा पर निकले एक राज्यपाल की तरह है जिसके साथ-साथ सुरक्षा भी चलती है। गण चारों ओर हैं। आप लोग सहजयोगी हैं, आप ऐसे विशेष लोग हैं कि जहाँ कहीं भी आप हों - सोते, चलते, बैठे हुए, वह संबंध बना रहता है।

आपको कुछ नहीं कहना पड़ता, न आज्ञा देनी होती है, न प्रार्थना करनी होती है। यह शक्ति आपकी सेवा में होती है क्योंकि परमात्मा के साम्राज्य के राज्यपालों में से आप भी एक हैं। जो भी आपको दुःख देगा या आपका अपमान करेगा उसे इसकी सजा भुगतनी होगी। सांसारिक स्तर पर आप न तो उन चीजों की चिन्ता करें और न ही उनके विषय में सोचें। इसके विपरीत मैं तो यह कहूँगी कि क्षमा करना ही अच्छा होगा क्योंकि केवल परमात्मा ही जानते हैं कि दुर्व्यवहार करने वाले व्यक्ति के साथ क्या होगा। आप विशेष लोग हैं। आपको केवल अपना आत्मसम्मान तथा सन्तुलन बनाए रखना है।

एक बार सन्तुलन में आने के बाद एक गुरु का कार्य दूसरों को सन्तुलन देना है। यह जलवायु, प्रकृति, वातावरण, समाज तथा मनुष्यों को सन्तुलित करता है। वह सन्तुलन देने के लिए ही है। यह सन्तुलन गुरुत्व से आता है। यदि आपमें गुरुत्व है तो स्वतः ही आप सन्तुलित हो जाते हैं। यह सन्तुलन हम किस प्रकार विकसित करें? प्राचीन काल में व्रत, तपस्या, आसन आदि बहुत कठोर विधियाँ थीं। पर इनसे तो असन्तुलन आता है। यदि आप तपस्वी बन जाएं तो आप अति शुष्क हो जाएंगे। सम्भवतः कष्ट सहने के ये विचार इसलिए आए हैं ताकि लोग अपनी आत्मा की ओर अधिक चित्त दें। स्वभाव से गुरु तपस्वी नहीं होता परन्तु निर्लिप्तता के कारण वह तपस्वी होता है। राजा हो या भिखारी पर यदि वह गुरु है तो हर हाल में वह पूर्ण सन्तुलन में होगा। कोई चीज उसे ललचा नहीं

सकती। कोई प्रलोभन नहीं है। प्रलोभन, लालच और वासना से परे की अवस्था में जब आप पहुंचते हैं तो समस्याएं समाप्त हो जाती हैं। कोई चीज आपका पतन नहीं कर सकती। चाहे आप तुलसी की माला पहने या हीरे-मोतियों की, इसका आप पर कोई असर नहीं हो सकता। पर आप किसी चीज से भाग भी नहीं खड़े होते। यदि आप भाग खड़े होते हैं तो आप बनावटी रूप से तपस्वी हैं। तपस्विता तो आपके अन्दर है। यह अन्तर्जात है।

अधिकतर लोग समझते हैं कि वे गुरु नहीं हैं। वे आकर मुझे कहते हैं कि जो भी चिन्ह आपने बताए थे वे अब भी हैं। अब भी मुझ में इच्छाएं हैं। आप दूसरी ओर जा रहे हैं। मेरे कहे अनुसार आप अपने को तोलें नहीं। शनैः शनैः उन्नत होकर स्वयं को समझें और अपनी प्राप्त की हुई अवस्था पर स्थिर हो जाएं। परन्तु यदि अपने को तोलने लगेंगे तो आप आत्म-संशयी तथा उदासीन हो जाएंगे। "श्री माताजी ने कहा है कि ये गुण हममें होना चाहिए।" हर समय स्वयं को तोलते रहने का कोई लाभ न होगा। आप आत्म-विश्वस्त हैं। आप अपने बारे में विश्वस्त हैं।

कुछ लोग कहते माँ ने ऐसा कहा। हो सकता है मैंने कहा हो - हो सकता है मैंने न कहा हो - पर आप क्या कह रहे हैं? दूसरों को परेशान करने का यह अच्छा तरीका है। क्या अच्छा है इसका निर्णय आपने अपने अनुभव से उन्नत होकर करना है। मेरे से भी अधिक आनन्द आपमें है क्योंकि आप मानव हैं और मनुष्यों के विषय में जानते हैं। आप अपने उत्थान को देखते हैं और मूल्यांकन करना भी आपके लिए बहुत आसान है। मेरे लिए यह भिन्न है क्योंकि प्रलोभन आदि आपके गुणों का मुझे कोई ज्ञान नहीं है। आप मानव स्तर से उन्नत हुए हैं जो अति प्रशंसनीय है। मेरे, ईसा या श्री कृष्ण से कहीं अधिक आनन्द आप ले सकते हैं, क्योंकि जिसका उत्थान हुआ है वह इन सद्गुणों, खूबियों तथा महानता की सुगन्ध महसूस कर सकता है। तब वह आनन्द लेता है। इस परिवर्तन की पूर्ण समझ उसमें आ जाती है और जिन लोगों में आपसी सामर्थ्य, ज्ञान, गहनता और गुरुत्व नहीं है उन्हें आप समझते हैं। पहले आप मानव थे अब आप दिव्य हो गए हैं। मानव होने के नाते आप अन्य लोगों को समझते हैं। वास्तविक गुरु अति कठोर लोग थे। परन्तु मैं तो एक माँ हूँ। मानव स्तर से वे गुरु आए थे। आप उनसे भिन्न हैं। आपको यह सहज ही मिल गया है और दूसरे लोग भी आप से पा सकते हैं। आपको उन पर चिल्लाना नहीं पड़ता। किसी को कुछ कठोर कहने का अधिकार सहजयोगियों को नहीं है। आपको कुछ कहे बिना ही आपने आत्मसाक्षात्कार पा लिया। आपके पास भी आत्मसाक्षात्कार के लिए कोई आए तो आपको भी वही करना है। यदि आपके दृष्टिकोण में कठोरता है तो आप गुरु तो बन सकते हैं सहज गुरु नहीं।

एक गुरु तथा सहज गुरु में अन्तर होता है। साधारण गुरु अति क्रोधी होते हैं। पर क्रोधी होना सहज गुरु कार्य नहीं। यहाँ तो एक दूसरे के लिए प्रेम तथा करुणा है। न कोई राजनीति है न कोई स्पर्धा। यदि आप यह बात समझते हैं कि आपको सभी कुछ अति सहज ढंग से प्राप्त हुआ है तो आप उतनी ही सहजता से दूसरों को देते हैं तथा दूसरों का सम्मान करते हैं। आप जान लें कि आप सब गुरु हैं। आपको सहज होना होगा। आपको यह सहज ही प्राप्त हुआ है अतः कठोर, भयानक, क्रोधी तथा कड़े गुरु होना आपका काम नहीं है। परन्तु यह अवगुण रंगते हुए ऊपर आ जाते हैं और सहजयोग में कठोर अनुशासन शुरू हो जाता है। अनुशासन बढ़ता की कोई आवश्यकता नहीं है। लोग स्वयं ही अनुशासित हो जाएंगे। वे भी गुरु हैं। गुरु को कौन अनुशासित कर सकता है? फिर वे सहज हैं। इस असहज गुरुओं में से कोई भी आत्मसाक्षात्कार देना न जानता था। वे नहीं जानते थे कि हाथों से भी कुण्डलिनी उठ सकती है। इतिहास बताता है कि बहुत कम लोग आत्मसाक्षात्कार दे पाए। पर आप लोग सहज ही आत्मसाक्षात्कार दे रहे हैं। अब आप विज्ञान की सौमार्यें पार कर गए हैं। आप स्वयं देवी विज्ञान बन गए हैं और अपने तथा दूसरे लोगों के चक्रों की रुकावटों का आपको ज्ञान है। पर जिस करुणा, माधुर्य और हितेच्छा से हम दूसरे लोगों से व्यवहार करते हैं यही गुरुपद है। आपको माँ ने यही दिया है। हर मनष्य के हित को चिन्ता आपको होनी चाहिए। आपको मातृ-सुलभ, अति मधुर, करुणामय, समझदार तथा क्षमाशील होना है।

सहजयोग को फैलाना और पूरे विश्व का उद्धार करना हमारी जिम्मेवारी है। अतः अब पुरोहिताई की कोई आवश्यकता नहीं और न ही यह कहने की "यह व्यक्ति ऐसा कहता है"। आपने जो भी कहना है उसी व्यक्ति से कहें। आप स्वयं देखेंगे कि किस प्रकार आप अपने व्यक्तित्व को प्रतिबिम्बित कर रहे हैं और दूसरे व्यक्ति पर इसका क्या प्रभाव है और किस प्रकार का व्यवहार वह करता है। मैं देखती हूँ कि शनैः शनैः हमारी सामूहिकता यह सब सीख रही है तथा सभी भयंकर तथा प्रभुत्व जमाने वाले लोग सहजयोग से दौड़ गए हैं। मैं पाती हूँ कि लोग परस्पर तथा अन्य लोगों के प्रति अत्यन्त प्रेममय तथा करुणामय हैं क्योंकि आप अच्छाई, धर्मपरायणता, धैर्य, करुणा, प्रेम तथा हितकारिता के अवतार हैं। हम यह सब कैसे करें? आप हिम्मत न हारें। कार्य को करें और परिणाम देखें। आपके अतिरिक्त कोई इस कार्य को नहीं कर सकता। आत्मसम्मान तथा पूर्वानुमान होना चाहिए। यदि आप गुरु हैं तो अपनी शक्तियों को धारण कीजिए। आप अब भी सोचते हैं "परमात्मा जानता है कि मुझ में शक्तियाँ हैं या नहीं..... .. आदि आदि।" तो आप अभी तक नौसिखिया हैं। मुंह से

हम कहते हैं “श्री माताजी मैं स्वयं का गुरु हूँ।” आप केवल अपने ही गुरु नहीं हैं पूरे विश्व के गुरु हैं। हमारा गुरुत्व सामूहिक है। हम से कुछ भी बच नहीं सकता। हम पूर्णतया दुर्जेय हैं। हमें समझना है कि हमें धारण करना है। किसी को चुनकर हम उस पर कुछ कपड़े डालते हैं और यह कहते हैं ये पोप हैं। पर अन्दरूनी रूप से वह पोप नहीं है, वह केवल अभिनय कर रहा है। वह भ्रमशाल है। हम में तो सारी शक्तियाँ हैं जिन्हें अब हमें धारण करना है। एक बार जब आप इन्हें धारण करने लगेंगे तो आप हैरान रह जायेंगे कि एक संत, एक गुरु, एक व्यक्ति जिसे अपने गुरुत्व का आभास है, उसके सम्मुख कोई नहीं खड़ा हो सकता।

यह देखने के लिए कि आपका आत्मसम्मान पूर्णतया ठीक है, आपको अन्तर्दर्शन करना होगा। सहज की तरह की करुणा का दूसरे गुरुओं में अभाव है क्योंकि वे सोचते हैं कि हमने तो कठिन परिश्रम किया है, बाकी लोग क्यों न करें। आप विद्वान हो या अनपढ़, अमीर हो या गरीब, आप कुछ भी कार्य करते हों इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता। आप गुरु हैं, अपनी शक्तियों को धारण कीजिए। किसी अन्य प्रतिभा की तरह – उदाहरणार्थ संगीत। आपको पता है कि आप संगीत जानते हैं। आप जानते हैं कि आपको खाना बनाना आता है। पर वह भी पूर्णतया सम्पूर्ण नहीं हो सकता। आप तो पहले से ही वास्तविकता के पूर्णत्व हैं। वास्तविकता आपकी सेवा में है। केवल इसे धारण कर लें। आप बिल्कुल साधारण नहीं हैं। इस प्रकार आप सारी मूर्खताएं त्याग देंगे। अन्य लोग आपको देखकर हैरान होंगे। ज्ञान अत्यन्त उच्च स्तर का सूक्ष्म एवं महान है। इसके फलस्वरूप आप अहंग्रस्त नहीं होते। यह नम्रता एवं सहजता आपको एक विशेष धार प्रदान करती है जो हर हृदय में उतर सकती है इस प्रकार आप सत्यप्रेरक बन सकते हैं। विलियम ब्लेक की तरह आप भविष्य वक्ता बन सकते हैं। विश्वास रखें कि आपकी एकाकारिता उस महान शक्ति के साथ है जो सर्वशक्तिमान परमात्मा है।

लोग ईसा के निर्मल विचारों पर वाद-विवाद करते हैं। वे तो सर्वशक्तिमान परमात्मा हैं। वे कुछ भी कर सकते हैं। आप उनका और उनकी शक्तियों का मूल्यांकन किस प्रकार कर सकते हैं? परमात्मा के बारे में वाद-विवाद करने के लिए क्या आपमें बुद्धि है? नम्र होने पर आपको महसूस होता है कि वे सर्वशक्तिमान परमात्मा हैं, वे कुछ भी कर सकते हैं। तब विश्वास है, अन्ध-विश्वास न होकर वास्तविक श्रद्धा कि परमात्मा सर्वशक्तिमान हैं और आप उनके दूत बन गए हैं। इससे आपको सारी शक्ति एवं उत्साह प्राप्त होता है, परमात्मा की करुणा, प्रेम, चित्त और सूझबूझ आपको मिलती है। इस श्रद्धा की पूर्ण एकाकारित परमात्मा से होनी चाहिए। एक बार मैं एक बहुत ही कठोर पर सच्चे गुरु से मिलने गई। उसने

मुझसे ऐसे बात की जैसे किसी देवी से बात कर रहा हो। कहने लगा “ये सांसारिक लोग आपको कैसे लगते हैं?” मैंने कहा “ठीक हैं। मैंने ही उनकी सृष्टि की है।” उन्होंने कहा “आप परमात्मा हैं, अपनी शक्ति से इनमें थोड़ा परिवर्तन क्यों नहीं लाती?” मैंने कहा “मैंने उन्हें स्वतन्त्रता दी है। अतः यह उनकी इच्छा है कि वे परिवर्तित होना चाहते हैं या नहीं। मैं उन्हें विवश नहीं कर सकती। मैं जो चाहूँ कर सकती हूँ परन्तु कुछ चीजों में करना नहीं चाहती। चुनने की उन्हें स्वतन्त्रता है। यह स्वतन्त्रता उन्हें इसलिए दी गई है कि यदि वे पूर्ण स्वतन्त्रता चाहते हैं तो उन्हें अपनी इस स्वतन्त्रता को बनाए रखना होगा।” आप एक गुरु हैं। मान लो मैं सर्वशक्तिमान परमात्मा हूँ तो आपकी तरह बन सकती हूँ। तब उन्होंने अपने सभी शिष्यों से श्री माताजी के गुणगान करने को कहा क्योंकि परमात्मा को गुणगान पसन्द है। उन्होंने कहा “यदि आप परमात्मा के गुणगान करते हैं तो सदा आपको सबकुछ प्रदान करते हैं।” मैंने कहा “यह सत्य है।” बिना हार्दिक भक्ति के आप श्री माताजी तक नहीं पहुँच सकते।

बिना भक्ति के आप परमात्मा को नहीं पा सकते। यदि कोई अपनी कुण्डलिनी जागृत करवाना चाहे तो मैं ऐसा नहीं कर सकती। परन्तु यदि कोई नम्रता एवं श्रद्धापूर्वक आत्मसाक्षात्कार मांगे तो वह घटित होता है। केवल भक्ति ही नहीं विश्वास भी होना चाहिए। विज्ञान, कैथोलिक चर्च तथा कुछ भयानक लोग अब इस विश्वास को चुनौती दे रहे हैं। परमात्मा में आपका विश्वास अडिग होना चाहिए। कोई भी चीज उसे हिला नहीं सकती। आपने परमात्मा के चमत्कार देखे हैं। आपने देखा है कि आप किस प्रकार परमात्मा की शक्ति को कार्यान्वित कर रहे हैं। आप यह सब जानते हैं पर अब भी परमात्मा में विश्वास का अभाव है। जिस व्यक्ति को परमात्मा पर पूर्ण विश्वास है वह स्वयं परमात्मा है। गुरु को ब्रह्म चैतन्य कहते हैं। जब आपका विश्वास पूर्णतया स्थिर हो जाता है कि सर्वशक्तिमान परमात्मा है और मैं उनका दूत हूँ, और जब आपमें यह विश्वास पूर्णतया दृढ़ हो जाता है तब आप गुरुपद पर आरूढ़ हो जाते हैं।

आज मैं आप सबको आशीर्वाद देती हूँ कि आप उस स्थिति को प्राप्त करें कि सदा गुरुपद अवस्था में रहें। जहाँ भी आप हैं, किसी भी पद पर आप हों, आप कुछ भी करें, सर्वशक्तिमान परमात्मा का दृढ़ विश्वास अपनी अभिव्यक्ति करेगा और प्रकट भी होगा। यह परमात्मा की तरह कार्य करेगा।

आज हमें एक बात अवश्य याद रखनी है कि परमात्मा के साम्राज्य में, सर्वशक्तिमान परमात्मा की शक्तियों में और फिर स्वयं में हमारा पूर्ण विश्वास होना ही चाहिए।

परमात्मा आप पर कृपा करें।